

दिल्ली परिवहन विभाग के अधूरे दिशा निर्देशों से वाहन मालिक परेशान क्या है कोई जवाब

संजय बाटला, सम्पादक

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग के अंतर्गत आने वाली प्रवर्तन शाखा और फिटनेस शाखा के आला अधिकारी डिप्यूटी कमिश्नर ओम धोले और स्पेशल कमिश्नर शहजाद आलम ही हैं और उनके द्वारा जारी अधूरे दिशा निर्देशों / आदेशों के फायदे उठा रहे हैं शाखा कर्मचारी। दिल्ली में प्रदूषण नियंत्रण के लिए यूरो VI के अतिरिक्त किसी अन्य डीजल वाहनों को चलने की बंदिश के दिशा निर्देश जारी हैं जिसके तहत परिवहन विभाग से ऑनलाइन समय प्राप्त कर अपने वाहन की फिटनेस करवाने वाले भी मालिक हैं पर प्रवर्तन शाखा के अधिकारी उन्हें फिटनेस शाखा जाने की छुट नहीं दे रहे जबकि उनके पास फिटनेस के लिए प्राप्त आनलाइन तारीख और समय के सबूत उपलब्ध हैं और फिटनेस शाखा वाले समय सीमा पर वाहन ना पहुंचने पर वाहन मालिक से समय पर फिटनेस प्रमाण पत्र नहीं प्राप्त करने के बदले प्रतिदिन के जुर्माने के साथ



पंजीकरण प्रमाण पत्र के नवीनीकरण की फीस जमा करने पर ही फिटनेस की इजाजत दे रहा है। अब यह सवाल उठता है कि यहां पर वाहन मालिक की क्या गलती है जो परिवहन विभाग उसके वाहन को समय पर फिटनेस नहीं प्राप्त करने दे रहा है और ऊपर से उस पर जुर्माना और पंजीकरण प्रमाण पत्र के

नवीनीकरण की फीस भी मांग रहा है और जब बिना फिटनेस के वाहन रहेगा तब कोई हादसा या दुर्घटना हो गई तो बीमा कंपनी भी क्लेम नहीं देगी। कितना अच्छा है ना परिवहन विभाग द्वारा जारी अधूरा दिशा निर्देश जिसमें परिवहन विभाग की चांदी और वाहन मालिक का बुरा हाल।

200%

Vehicle - Vehicle Services

APPOINTMENT E-RECEIPT

TRANSPORT DEPARTMENT, GOVERNMENT OF NCT OF DELHI

Registration Authority RTO / Fitness Center, JHAJHULI FITNESS CENTER, JHAJHULI FITNESS CENTER, 110073

Appointment Id	DL169972694105	Appointment Date	13-Nov-2023
Registration No.	DL23112K5658175	Application Date	12-Nov-2023
No.	DL5GCA456	Chassis No.	MB5CTDWC7FMP5670
Name	HET RAM	Vehicle Class	Goods Carrier
Body	CLOSED BODY-	Seating capacity	3
NATIONAL PMT			

APPOINTMENT DETAILS

Appointment Date	Appointment Time Slot	Counter	Available Service
11-Nov-2023	10:30-12:30	Fitness Certificate	Fitness Inspection/Certificate

Instructions:

For necessary action, the registered owner shall have to produce the said vehicle for on the date, time and place as above, along with e-receipt of respective service to be availed necessary documents.

Owner fails to produce the vehicle on the appointed date, time and place, he/she shall have to ask for appointment of next available date through online mode and shall be liable to pay inspection/Test Fee again as per provision of respective State Motor Vehicle Rule.

Nov-2023 18:20

Registering Authority

This is a computer generated document, no need of signature.

Please take the print of checklist before going to RTO.

advertisement Tariff			
w.e.f. 1st January 2023			
परिवहन विशेष			
दिल्ली, एनसीआर से प्रसारित लोकप्रिय साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र			
in Ru. / Sq. Cm			
	Basic	3rd Page	Back Page
Delhi Aur Delhi	BW - Colour	Colour	Colour
Delhi	100*	200*	250*
	300	300	300
Special Instructions:-			
■ Innovation on any page will be accepted at a premium of 100% on applicable card rate.			
■ Any specified position will be accepted at a premium of 25% on applicable card rate.			
■ 3/W advertisement on page 3/Back will be charged at colour rate.			
■ Classified display advertisement will be charged on basic display rate.			
■ Printers 4x4 sq. Cm or 5x4 sq. cm. will be charged as per card rate.			
■ Box reply charges (each box) will be charged Rs. 150/-			
■ Political advertisement - as applicable.			
परिवहन विशेष में विज्ञापन के लिए ऑनलाइन भुगतान सीधे बैंक खाते/फोन पे पर कर सकते हैं और विज्ञापन के मैटर के साथ ऑनलाइन भुगतान की रसीद क्लासिफिकेशन नंबर 09212122095 या newstransportvishesh@gmail.com पर भेज सकते हैं। भुगतान करने के लिए *NEFT / IMPS / RTGS* Account Name:-Transport Vishesh Limited IFSC CODE :- INDB0001396 Cur Account no :- 259212122095 या Phone pay :- 9212122095			

दिल्ली आने-जाने वाले ध्यान रखें: आज से 27 नवंबर तक इन रास्तों से बचकर चलें, ट्रैफिक पुलिस ने जारी की एडवाइजरी

परिवहन विशेष न्यूज

अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला के चलते मथुरा रोड, भैरों मार्ग, रिंग रोड, शेरशाह रोड और पुराना किला रोड पर मेले के दिनों में ट्रैफिक जाम की उम्मीद है। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने व्यापार मेले में नहीं आने वाले लोगों से अनुरोध किया है कि परेशानी मुक्त यात्रा सुनिश्चित करने के लिए प्रगति मैदान की तरफ आने से बचें।

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला प्रगति मैदान में मंगलवार से शुरू हो रहा है। मेले में प्रत्येक दिन लगभग 40,000 दर्शकों के आने की संभावना है। सप्ताहांत व छुट्टियों वाले दिन ये संख्या एक लाख हो सकती है। ऐसे में मथुरा रोड, भैरों मार्ग, रिंग रोड, शेरशाह रोड और पुराना किला रोड पर मेले के दिनों में ट्रैफिक जाम की उम्मीद है। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने व्यापार मेले में नहीं आने वाले लोगों से अनुरोध किया है कि परेशानी मुक्त यात्रा सुनिश्चित करने के लिए प्रगति मैदान की तरफ आने से बचें।

इस समय का ध्यान रखें-
- मेले में 14 से 18 नवंबर तक केवल उद्यमियों को ही प्रवेश मिलेगा।
- व्यापार मेला 19 से 27 नवंबर तक आम जनता के लिए खुला रहेगा।
- गेट नंबर 5-ए, 5-बी, 7, 8 और 9 से आगंतुकों का प्रवेश नहीं होगा।
- आगंतुकों के लिए प्रवेश गेट नंबर 01, 04,

- 6, 10 और शिल्प संग्रहालय गेट से होगा।
-आईटीपीओ अधिकारियों के लिए प्रवेश गेट नंबर 4 और 10 से होगा।
- सभी दिनों में शाम 6.00 बजे के बाद व्यापार मेले में कोई प्रवेश नहीं होगा।
-प्रगति मैदान में टिकटों की बिक्री नहीं होगी।
-टिकट ऑनलाइन और चयनित मेट्रो स्टेशन (सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन को छोड़कर) पर बेचे जाएंगे।
-चालक चालित वाहनों और टैक्सियों के लिए उतरने का स्थान गेट नंबर तीन और सात के सामने सर्विस लेन पर होगा।
- सार्वजनिक सुरक्षा के हित में मेले में प्रवेश पहले बंद किया जा सकता है।
- प्रगति मैदान के आसपास सुचारु यातायात प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए किए गए हैं ये उपाय
- मथुरा रोड और भैरों मार्ग पर किसी भी वाहन को कहीं भी रुकने या पार्क करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- आगंतुकों को शेर शाह रोड, पुराना किला रोड, भगवान दास रोड व तिलक मार्ग पर पार्क करने की अनुमति होगी।
- उपरोक्त सड़कों पर पार्क किए गए वाहनों को हटा दिया जाएगा और अनुचित पार्किंग के लिए मुकदमा चलाया जाएगा। उठाए गए वाहनों को नेशनल स्टैडियम में पार्क किया जाएगा।
- मथुरा रोड से भगवानदास रोड और सुब्रमण्यम भारती मार्ग की ओर राइट टर्न की अनुमति नहीं होगी।
- ट्रेड फेयर में ऐसे जाएं-
- लोगों से प्रगति मैदान पहुंचने के लिए मेट्रो



आदि सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने का सलाह दी गई है। मेट्रो से आने वाले लोग सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन उतर सकते हैं। इसके बाद गेट नंबर -10 से प्रगति मैदान के अंदर जा सकते हैं। लोग मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन उतरकर पैदल भी जा सकते हैं।
- दिल्ली या एनसीआर से यात्रा करने के लिए

डीटीसी बसों का उपयोग करने वाले मथुरा रोड व भैरों मार्ग बस स्टॉप पर उतर सकते हैं।
- जो लोग अपने वाहनों से प्रगति मैदान जाएंगे वह भैरों मंदिर पार्किंग, भैरों रोड, दिल्ली चिडियाघर, भगवान दास रोड (केवल शनिवार और रविवार को) पर पार्क कर सकते हैं।
- निजी वाहनों से आने वाले लोग कार-पूलिंग

पसंद कर सकते हैं। गेट नंबर 1 प्रगति मैदान तक भैरों मंदिर पार्किंग तक शटल सेवा भी उपलब्ध होगी
- मथुरा रोड पर भारी पैदल यात्री आवाजाही होगी। क्योंकि भारी ट्रैफिक के भी चलने की उम्मीद है। ऐसे में पुलिस ने लोगों को फुट ओवर ब्रिज का इस्तेमाल करने की सलाह दी है।

दिवाली-छठ पर ट्रेनों में भीड़: यात्रीगण कृपया ध्यान दें, दिल्ली के इन दो स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म टिकट बंद

उत्तर रेलवे ने दिवाली और छठ के मौके पर भीड़ को नियंत्रित करने के लिए दिल्ली के दो प्रमुख स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म टिकटों की बिक्री को बंद कर दिया है।



भारतीय रेलवे ने दीपावली और छठ पूजा को देखते हुए दिल्ली के दो स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म टिकट को बंद कर दिया है। यात्रियों की तादाद को देखते हुए बड़ी संख्या में स्पेशल ट्रेन चलाने के साथ ही सुरक्षित सफर के लिए भीड़ को देखते हुए यह फैसला लिया गया है। मिली जानकारी के मुताबिक, उत्तर रेलवे ने दिवाली और छठ के अवसर पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने और भीड़ को नियंत्रित करने के लिए नई दिल्ली और आनंद विहार रेलवे स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म टिकटों की बिक्री 13 से 18 नवंबर तक अस्थायी रूप से बंद कर दी है।

टैपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन

एंड वेल्फेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/ 25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए-4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिवाली के बाद इतना बढ़ गया एक्यूआई, दिवाली के एक दिन बाद दिल्ली में हवा की गुणवत्ता फिर से खराब स्तर पर पहुंच गई

परिवहन विशेष न्यूज

दिवाली के एक दिन बाद दिल्ली में हवा की गुणवत्ता फिर से खराब स्तर पर पहुंच गई है। दिवाली के एक दिन बाद हवा में मौजूद सभी कणों में सबसे हानिकारक पीएम2.5 आज सुबह 7 बजे 200.8 दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के दर्ज आंकड़ों के मुताबिक, दिवाली की सुबह ये आंकड़ा 83.5 था।

सीपीसीबी के आंकड़े बताते हैं कि दिल्ली के रोहिणी, आईटीओ और दिल्ली आईजीआई समेत ज्यादातर इलाकों में पीएम2.5 और पीएम10 प्रदूषण का स्तर 500 तक पहुंच गया। वहीं दिल्ली के लाजपत नगर और जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम सहित कई इलाकों में एक्यूआई 900 से ऊपर बताया गया। दिल्ली में कल दिवाली के दिन आठ वर्षों में सबसे अच्छी वायु गुणवत्ता देखी गई, लेकिन एनसीआर

में सुप्रीम कोर्ट के आदेश का उल्लंघन होने के बाद आज सुबह अधिकांश इलाकों में एक्यूआई 500 को पार कर गया।
ऐसे मापा जाता है एक्यूआई
हवा की गुणवत्ता के बारे में अच्छे से पता किया जा सके। ऐसे में एक्यूआई को 6 कैटेगरी में बांटा गया है।
0-50 = शुद्ध हवा है
51-100 = संतोषजनक हवा है
101-200 = मध्यम
201-300 = खराब हवा है
301-400 = बेहद खराब हवा है
410-500 = गंभीर श्रेणी
कैसे मापी जाती है हवा की गुणवत्ता
हवा की गुणवत्ता के बारे में पता करने के लिए सरकार अलग-अलग जगहों पर एयर क्वालिटी को मापने वाले मीटर को लगाती है। यह एक थर्मामीटर की तरह काम करता है और हवा की गुणवत्ता के बारे में पता करने का काम करता है। हवा की गुणवत्ता खराब होने के कारण आंख, गले और फेफड़े से जुड़ी तकलीफ बढ़ने लगती है। इसका सबसे बड़ा खतरा बच्चों और बुढ़ों पर होता है। इस दौरान कई लोगों को तो खांसी और सांस लेने में तकलीफ का सामना भी करना पड़ता है।



पांच राज्यों के चुनावों में युवाओं और महिला मतदाताओं पर है सर्वाधिक दारोमदार

उमेश चतुर्वेदी

इस लिहाज से देखें तो औसतन हर सीट पर करीब 9722 नए वोटर होंगे। लेकिन प्रति सीट नए वोटर के लिहाज से राजस्थान की स्थिति मध्य प्रदेश से बेहतर है। राजस्थान विधानसभा चुनावों में पहली बार करीब 22 लाख चार हजार वोटर वोट डालने जा रहे हैं।

पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों का बिगुल बज चुका है। राजनीतिक दलों के सियासी जोड़-घटाव में जुड़ना स्वाभाविक है। लेकिन चुनाव आयोग के आंकड़ों पर भरोसा करें तो इन चुनावों में सबसे अहम भूमिका युवा मतदाताओं की होने जा रही है। माना जा रहा है कि जिन्होंने युवाओं को साध लिया, जीत उसके हाथ लगने की संभावना ज्यादा है। इसकी वजह है, इन राज्यों में नए वोटर बने कुल मतदाताओं की संख्या। पाँचों राज्यों में पहली बार करीब साठ लाख वोटर मतदान करने वाले हैं। जाहिर हैं कि उनमें पहली बार वोट डालने का उत्साह है और वे अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग भी पूरे उत्साह से करेंगे। जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, उनमें जनसंख्या के लिहाज सबसे बड़ा राज्य मध्य प्रदेश है। यहाँ सबसे ज्यादा 22 लाख 36 हजार नए वोटर बने हैं। राज्य में 230 विधानसभा सीटें हैं। इस लिहाज से देखें तो औसतन हर सीट पर करीब 9722 नए वोटर होंगे। लेकिन प्रति सीट नए वोटर के लिहाज से राजस्थान की स्थिति मध्य प्रदेश से बेहतर है। राजस्थान विधानसभा चुनावों में पहली बार करीब 22 लाख चार हजार वोटर वोट डालने जा रहे हैं। राज्य

की 200 विधानसभा सीटों के लिहाज से देखें तो हर सीट पर करीब 11020 नए वोटर होंगे। इसी तरह छत्तीसगढ़ में सात लाख 23 हजार नए वोटर बने हैं। जिनका प्रति सीट औसत आठ हजार 33 हो रहा है। नए वोटरों के रुझान और उससे पड़ने वाले सियासी प्रभावों के पहले तीनों राज्यों में महिला वोटरों की संख्या पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसकी वजह यह है कि पिछले कुछ चुनावों से महिलाओं के मतदान का रुझान अपने परिवारों से कुछ अलग नजर आया है। पहले माना जाता रहा कि परिवार के पुरुष मुखिया के वैचारिक रुझान के हिसाब से ही महिलाएं भी वोट देती रही हैं। लेकिन अब महिलाएं अपनी पसंद के हिसाब से वोट डालने लगी हैं। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में मोदी की जीत के पीछे महिलाओं और युवा वोटरों का साथ माना गया था। छत्तीसगढ़ ऐसा राज्य है, जहां पुरुष वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या ज्यादा है। वहां के एक करोड़ एक लाख पुरुष वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या एक करोड़ दो लाख है। जाहिर है कि हर सीट पर करीब 1111 महिला वोटर पुरुष वोटरों की बनिस्बत ज्यादा हैं। हालांकि मध्य प्रदेश और राजस्थान में ऐसी स्थिति नहीं है। राजस्थान में दो करोड़ 74 लाख वोटरों के सामने करीब दो करोड़ 52 लाख ही महिला वोटर हैं। इसी तरह मध्य प्रदेश के दो करोड़ 88 लाख पुरुष वोटरों के अनुपात में महिला वोटरों की संख्या दो करोड़ 72 लाख ही है। इन आंकड़ों पर फौरी तौर पर निगाह देने की जरूरत विगत के मतदान में में युवा और महिला वोटरों की भागीदारी का रुझान है। दोनों वर्गों के मतदाताओं ने जिसे चाहा, जीत उसे ही हासिल हुई। विगत के हिमाचल चुनावों में महिलाओं ने कांग्रेस को सबसे ज्यादा समर्थन दिया, जिसकी वजह से कांग्रेस को भाजपा के मुकाबले कुल 36 हजार से कुछ ज्यादा मत



मिले और वह जीत हासिल करने में कामयाब रही। कुछ ऐसी ही स्थिति कर्नाटक में भी रही। वहां के स्थानीय मुद्दों खासकर पांच गांरटी और महंगाई ने महिलाओं और युवाओं को ज्यादा लुभाया। इस लिहाज से देखें तो राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनावों में भी महिला और युवा वोटर बड़ी भूमिका निभाने जा रहे हैं। शायद यही वजह है कि तीनों ही राज्यों के दोनों प्रमुख प्रतिद्वंद्वी दलों की कोशिश महिलाओं और युवाओं को रिझाने की है। महिला सम्मान निधि और

युवाओं को बेरोजगारी भत्ता आदि देने के जो नानादन वायदे किये जाते रहे, उसकी वजह यही रही। साल 1989 के चुनावों के पहले तत्कालीन राजीव सरकार ने युवाओं के मतदान के लिए उम्रसीमा को 21 से घटाकर 18 साल कर दिया था। राजीव को उम्मीद थी कि उन्हें युवाओं का साथ मिलेगा। साल 2014 के ठीक पहले सचिन तेंदुलकर को भारत रत्न देने के पीछे तत्कालीन कांग्रेस सरकार की सोच सचिन को सम्मानित करने के साथ ही इसके जरिए युवाओं में पैठ बनाने की थी। यह बात और है कि दोनों ही बार कांग्रेस

का दांव नाकाम रहा। चुनावी पंडित मानते हैं कि राजीव की हार में नए बने करोड़ों वोटरों ने बड़ी भूमिका निभाई थी। हाल के वर्षों में महिलाओं ने जिस तरह खुलकर अपनी पसंद के हिसाब से मतदान करना और राजनीति उम्मीदवार को चुनना शुरू किया है, वह अब छुपा नहीं है। 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में विपरीत हालात के बाद नीतीश को जीत मिली, उसकी बड़ी वजह महिलाओं का समर्थन रहा। इसी तरह 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में योगी सरकार को

महिलाओं ने खूब समर्थन दिया। पश्चिम बंगाल में ममता के साथ महिला वोटर पूरे दम के साथ खड़ी रहीं। इन चुनावों के नतीजे सामने हैं। इस लिहाज से देखें तो राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनावी नतीजों पर बड़ा दारोमदार महिलाओं पर ही होगा। छत्तीसगढ़ में तो महिलाएं पुरुषों के मुकाबले ज्यादा ही हैं, इसलिए वहां तो यह साफ लग रहा है कि जिधर महिलाएं गईं, उसी के नेता के सिर ताज होगा। उनके वोटों में अगर युवाओं का साथ मिल गया तो उस दल के लिए वह सोने पर सुहगा ही होगा।

वायु प्रदूषण का बढ़ने लगा खतरा, गर्भवती महिलाओं को ज्यादा रиск, ऐसे करें बचाव

इस महीने की शुरुआत से ही दिल्ली-एनसीआर समेत कई इलाकों में प्रदूषण का लेवल बढ़ रहा है. ऐसे में डॉक्टरों ने अलर्ट किया है. डॉक्टरों का कहना है कि अभी से लोगों को वायु प्रदूषण से बचाव करना होगा. इसके लिए डॉक्टरों ने कुछ टिप्स साझा किए हैं.

मौसम में परिवर्तन और ठंड शुरू होने के साथ ही दिल्ली और एनसीआर समेत कई इलाकों में वायु प्रदूषण के स्तर में इजाफा होने लगा है. बढ़ते खतरों को देखते हुए दिल्ली-एनसीआर में ग्रेप का पहला चरण भी शुरू करने का आदेश दिया गया है. प्रदूषण की वजह से सेहत पर भी गंभीर असर होता है. इससे लंग्स इंफेक्शन, अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारी हो जाती है. प्रदूषण का सबसे ज्यादा खतरा गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों को होता है. डॉक्टरों का कहना है कि प्रेग्नेंट महिलाओं को अभी से उनकी सेहत का ध्यान रखना होगा. ऐसा इसलिए क्योंकि आने वाले दिनों में प्रदूषण का लेवल बढ़ेगा. अगर अभी से सावधानी बरती तो भविष्य में गंभीर खतरे से बचाव हो सकता है.

गुरुग्राम के मैक्स हॉस्पिटल्स में एसोसिएट डायरेक्टर (ऑब्स्टेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजी) और औस स्पेशलिटी क्लीनिक की डायरेक्टर डॉ. रितु सेठी बताती हैं कि वायु प्रदूषण के बढ़ने की वजह से लोगों को कई तरह की परेशानियाँ होती हैं. जिन लोगों को पहले से ही सांस संबंधित बीमारियाँ हैं उनको अधिक खतरा रहता है.

खासतौर पर गर्भवती महिलाओं और बच्चों को बढ़ते प्रदूषण के कारण ज्यादा परेशानी होती है, हालांकि अभी प्रदूषण अधिक नहीं है, लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा. ऐसे में अभी से बचाव करना जरूरी है. प्रदूषण से बचाव नहीं किया तो गर्भवती महिला को कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं.

प्रेग्नेंट महिलाओं को खतरा

डॉ. रितु शेठी बताती हैं कि वायु प्रदूषण का लेवल बढ़ने से गर्भवती महिलाओं को सांस की परेशानी हो जाती है. जिन महिलाओं को पहले से ही अस्थमा है तो उनकी बीमारी अचानक बढ़ने लगती है. अस्थमा अटैक नहीं है तो भी सांस लेने की परेशानी हो सकती है. इसके साथ ही घरबारहट भी होती है.

बढ़ते प्रदूषण का असर गर्भवती महिला के होने वाले बच्चे पर भी पड़ सकता है. बच्चे को जन्म के बाद में आईसीयू में भर्ती करने की जरूरत पड़ सकती है. कुछ मामलों में प्रीमैच्योर बर्थ होने का भी रиск रहता है. ऐसे में महिलाओं को वायु प्रदूषण से बचाव करना होगा. इसके लिए इन टिप्स को फॉलो कर सकते हैं.

ऐसे करें बचाव

ब्रीदिंग एक्सरसाइज करें

सुबह के समय घर से बाहर न निकलें

अगर सांस लेने में परेशानी हो रही है तो डॉक्टर से सलाह लें

रोज सुबह योग करें

अधिक प्रदूषण है तो बाहर मास्क लगाकर निकलें

रसोई गैस ने 55% महिलाओं को सांसों की बीमारी से बचाया, 2022 में 32 लाख मौतों की वजह बना घरेलू वायु

2014 के बाद से बढ़ाए गए एलजीपी गैस नेटवर्क और खास तौर पर गरीब परिवारों को उज्ज्वला योजना के तहत दिए गए 9.59 करोड़ रसोई गैस कनेक्शन का ही परिणाम है कि 55 प्रतिशत महिलाओं में सांसों की बीमारी कम दर्ज की गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट कहती है कि 2020 में विश्व में करीब 32 लाख लोगों की मौत का कारण हानिकारक घरेलू वायु प्रदूषण रहा।

यह दुनिया की हालत दिखाता चिंताजनक आंकड़ा है कि वर्ष 2022 में दुनिया भर में 32 लाख मौतें घरेलू वायु प्रदूषण की वजह से हुईं। इस प्रदूषण का मुख्य कारण लकड़ी, कोयला, केरोसिन आदि पर खाना पकाना ही था। 2014 के बाद से बढ़ाए गए एलजीपी गैस नेटवर्क और खास तौर पर गरीब परिवारों को उज्ज्वला योजना के तहत दिए गए 9.59 करोड़ रसोई गैस कनेक्शन का ही परिणाम है कि 55 प्रतिशत महिलाओं में सांसों की बीमारी कम दर्ज की गई है।

उज्ज्वला कनेक्शन बढ़ाने के फैसला

29 अगस्त (मंगलवार) को उज्ज्वला कनेक्शन बढ़ाने के फैसले को बेशक राजनीतिक चश्मे से ही देखा जाएगा लेकिन इस निर्णय का सबसे बड़ा पहलू महिला सशक्तीकरण और स्वास्थ्य से जुड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट कहती है कि 2020 में विश्व में करीब 32 लाख लोगों और पांच वर्ष से कम आयु के 237000 बच्चों की मौत का कारण हानिकारक घरेलू वायु प्रदूषण रहा।

सांस संबंधी बीमारियां महिलाओं के लिए बनी हुई थीं खतरा

भारत में भी खास तौर पर ग्रामीण आबादी इस संकट से जूझ रही थी। खास तौर पर सांस संबंधी बीमारियां महिलाओं के लिए खतरा बनी हुई थीं। दरअसल, भारत में एलपीजी 1950 के दशक में आई, लेकिन वर्ष 2014 तक सिर्फ 14.5 करोड़ परिवारों को ही गैस कनेक्शन मिल सका। इसका कारण सीमित गैस वितरण नेटवर्क भी था। मोदी सरकार में उज्ज्वला के पहले और दूसरे चरण में मिलाकर कुल 9.59 करोड़ गरीब परिवारों को एलपीजी गैस कनेक्शन दिए जा चुके हैं।

क्या कहते हैं एलपीजी नेटवर्क के आंकड़े ?

सरकार ने कुल एलपीजी नेटवर्क को



भी बढ़ाया। 2014 तक नेशनल एलपीजी कवरेज 55.90 प्रतिशत था, जो अप्रैल 2023 में 105.1 प्रतिशत हो गया। इसी

तरह कुल सक्रिय एलपीजी उपभोक्ताओं की संख्या 2014 की तुलना में 1451.76 से बढ़कर 3140.33 लाख हो गए हैं।

आंकड़े उस मिथक को भी नकारते हैं कि उज्ज्वला के लाभार्थी महंगाई की वजह से सिलेंडर दोबारा नहीं भरा पा रहे। सरकार

के मुताबिक, वर्ष 2022-23 में उज्ज्वला के लाभार्थियों ने 35 करोड़ से अधिक सिलेंडर रीफिल कराए हैं।

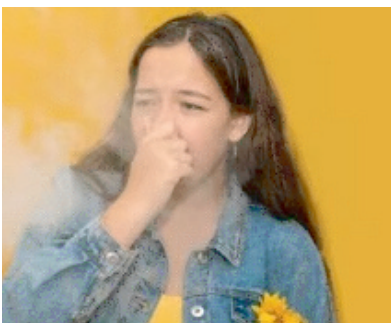
वायु प्रदूषण और महिलाओं के मोटापे का है कोई संबंध, शोध ने बताया क्या!

अधेड़ उम्र की महिलाओं में वायु प्रदूषण के असर के कारण वे मोटी (Obese) होती जा रही हैं. (तस्वीर: Wikimedia Commons) अधेड़ उम्र की महिलाओं में वायु प्रदूषण के असर के कारण वे मोटी (Obese) होती जा रही हैं.

मोटापा एक वृहद वैश्विक समस्या होती जा रही है. बेशक यह कोई रोग नहीं है लेकिन आज के दौर में यह एक साथ कई बीमारियों (Disease) के होने की वजह बन जाता है. मोटापा लाइफस्टाइल की कई खामियों के होने का संकेतक भर है, जो कि अस्वस्थ खुराक, कसरत की कमी, अनुवांशिकी या फिर इन सभी समस्याओं का होना बताता है. लेकिन क्या पर्यावरण में कोई ऐसा कारक है जिसका मोटापे से संबंध. अगर नए अध्ययन की माने तो वायुप्रदूषण (Air Pollution) और महिलाओं में अधिक वजन के बीच में एक संबंध है. जो कि साधारण लोगों के लिए ही नहीं बल्कि वैज्ञानिकों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों के लिए भी एक चौंका देने वाला नतीजा है.

50 साल के आसपास की उम्र की महिलाएं

यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन के शोधकर्ताओं ने अपने नए अध्ययन में इस अप्रत्याशित संबंध की खोज है. इस अध्ययन के प्रथम लेखक जिन वांग के मुताबिक उम्र के 40 और 50 साल के दशक में पहुंच चुकीं जो महिलाएं वायुप्रदूषण का लंबे समय से सामना कर रही हैं, जिससे उनका शारीरिक भार अनुपात, कमर का आकार और शरीर का फैट बढ़ने लगता है. जिस वजह से उन्हें सेहत संबंधी अन्य



समस्याओं का सामना करना पड़ता है. **वायुमंडलीय प्रदूषकों से गहरा नाता**

इन नकारात्मक प्रभावों का नाइट्रोजन ऑक्साइड, ओजोन और उच्च स्तर के महीन कणों से विशेष संबंध है जो प्रमुख वायु प्रदूषक के तौर पर जाने जाते हैं. शोधकर्ताओं ने लिखा है कि इस अध्ययन में उन्होंने अमेरिका की 1654 श्वेत, अश्वेत, चीनी और जापानी महिलाओं को शामिल किया था जिनकी औसत उम्र साल 2000 से 2008 के बीच में 49.6 साल थी.

शरीर संरचना के मापन

शोधकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने प्रतिभागियों के रिहायशी पतों के आधार पर उनके इलाकों के वायु प्रदूषण की मात्रा से जोड़ा. प्रतिभागियों के आकार का मापन और शरीर संरचना का मापन करीब साल में एक बार की मुलाकातों में डीएक्सए का उपयोग किया गया. इससे पता चल सका है कि मोटापे को वास्तव में वायुप्रदूषण के कौन से कारक प्रभावित करते हैं.

प्रतिमान का उपयोग

शोधकर्ताओं ने रेखीय मिश्रित प्रभावों वाले



प्रतिमानों का उपयोग किया जिसमें उन्होंने वायुप्रदूषण और शरीर के आकार और संरचनात्मक मापनों के बीच संबंध का परीक्षण किया और यह भी जानने की कोशिश की कि इन संबंधों में किन भौतिक गतिविधियों की वजह से अंतर आ रहा है. और किन कारणों ने सेहत में निर्णायक बदलाव आ रहे हैं.

कई कारकों में बदलाव

इस अध्ययन के नतीजों के विश्लेषणों ने दर्शाया कि वायु प्रदूषण के संपर्क में आने का संबंध शरीर में ज्यादा फैट, उच्च अनुपात फैट, और मध्य उम्र की

महिलाओं में निम्न कमजोर भार से है. जैसे इसमें से शरीर का फैट 45 प्रतिशत यानि करीब 2.6 पाउंड या 1.18 किलोग्राम तक बढ़ा पाया गया था. इसी तरह के नतीजे बाकी कारकों में भी देखने को मिले.

वायु प्रदूषण (Air Pollution) से वजन बढ़ने, शरीर का आकार बढ़ने जैसे कई कारक तत्व प्रभावित होते हैं. (प्रतीकात्मक तस्वीर: shutterstock)

शारीरिक गतिविधि

इसके अलावा शोधकर्ताओं ने शरीर संरचना के

लिए लिहाज से वायु प्रदूषण और शारीरिक गतिविधि के बीच संबंध की भी पड़ताल की. उन्होंने पाया कि उच्च स्तर की शारीरिक गतिविधि प्रभावी रूप से शारीरिक संरचना के बदलावों को कम कर सकती है जिनका संबंध वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से है.

यह अध्ययन डाइबिटीज केयर में प्रकाशित हुआ है. इस शोध में वांग ने समझाया कि चूंकि इस अध्ययन ने मध्य उम्र की महिलाओं को लक्षित किया था, इसलिए इस अध्ययन की पड़ताल के नतीजों को पुरुषों और दूरी उम्र की महिलाओं के लिए समान्य रूप से लागू नहीं होता है.

दिल्ली में पटाखों पर सियासत: कपिल मिश्रा के पोस्ट से बवाल, टीएमसी ने की शिकायत; जाने क्या बोले मनोज तिवारी

भाजपा नेता कपिल मिश्रा ने पोस्ट साझा कर लिखा कि आप पर गर्व है दिल्ली। यह प्रतिशोध की आवाजे हैं। यह आवाज लोकतंत्र और आजादी की हैं। लोगों इस अवैज्ञानिक, अतार्किक और तानाशाही योजना का विरोध कर रहे हैं। जिसके बाद सियासत तेज हो गई है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में बीती रात दिवाली के मौके पर जमकर आतिशबाजी हुई। जिससे साफ दिखा था कि दिल्ली के लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पूरी तरह से उल्लंघन किया। जिसके बाद भाजपा नेता कपिल मिश्रा के पोस्ट के बाद सियासी बवाल मच गया। सोमवार सुबह दिल्ली और आस पास के इलाकों में धुंध की मोटी चादर नजर आई।

भाजपा नेता कपिल मिश्रा ने पोस्ट साझा कर लिखा कि आप पर गर्व है दिल्ली। यह

प्रतिशोध की आवाजें हैं। यह आवाज लोकतंत्र और आजादी की हैं। लोगों इस अवैज्ञानिक, अतार्किक और तानाशाही योजना का विरोध कर रहे हैं। दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं। इसके जवाब में टीएमसी सांसद ने सवाल उठाआ और दिल्ली पुलिस को चिट्ठी लिखी है। तृणमूल कांग्रेस के सांसद साकेत गोखले ने दिल्ली के एक्यूआई को लेकर पोस्ट साझा की। उन्होंने पटाखों पर बैन के होने के बावजूद उल्लंघन करने का आरोप लगाया है।

आतिशबाजी पर क्या बोले मनोज तिवारी

दिल्ली में पटाखों पर बैन को लेकर चल रहे सियासी घमासान पर भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि बहुत कम पटाखे और ग्रीन पटाखे फोड़े गए। लेकिन कांग्रेस और अन्य पार्टियों के लोगों को दिवाली मनाने से दिक्कत है। उनका दर्द है कि सनातन धर्म के लोगों को अपना त्योहार नहीं मनाना चाहिए। दो दिन पहले बारिश हुई थी। बारिश से पहले एक्यूआई क्या था और अब कितना है। मुझे लगता है यह कम है।



दिल्ली में इजराइल-फिलिस्तीन शांति के लिए भूख हड़ताल



परिवहन विशेष। एसडी सेठी। दिल्ली के श्रीनिवास पुगि में इंटरनेशनल फॉर डेमोक्रेटिक वलुंड संगठन की ओर से वैश्विक शांति आंदोलन के तहत इजराइल और फिलिस्तीन में शांति के लिए भूख हड़ताल का आयोजन किया। भूख हड़ताल के पीछे की मांग है कि भारत सरकार इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध को समाप्त करने के लिए तत्काल पहल और हस्ताक्षर करे जिसमें हजारों निर्दोष लोग मर रहे हैं। और संयुक्त राष्ट्र और सभी विश्व नेता इजराइल और फिलिस्तीन को दो स्वतंत्र राज्य घोषित करके पश्चिम एशिया क्रेता क्रेता एक शांति बहाल करने के लिए पहल करे। इस बावत इंटरनेशनल एक्शन काउंसिल डेमोक्रेटिक क्लूड गवर्मेंट के ग्लोबल चेंयरमैन राजीव जोसेफ ने मीडिया से कहा कि एक्शन काउंसिल इजराइल और हमास के बीच हिंसा युद्ध का समर्थन नहीं करता है। दोनों मानवता के लिए सबसे खराब कूरतार कर रहे हैं।

दिल्ली में प्रदूषण पर एक और प्रहार: एनडीएमसी ने पार्किंग फीस को किया दोगुना, 31 जनवरी तक उठाना पड़ेगा बोझ

परिवहन विशेष न्यूज
एनडीएमसी की ओर से एक घंटे की कार की पार्किंग फीस 20 रुपये और दुपहिया की पार्किंग फीस 10 रुपये ली जाती है। इसके बाद प्रति घंटे कार की पार्किंग फीस में 20 रुपये व दुपहिया की पार्किंग फीस में 10 रुपये बढ़ोतरी का प्रावधान है, मगर पांच घंटे के बाद पार्किंग फीस में बढ़ोतरी का प्रावधान नहीं है।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के निर्देश पर एनडीएमसी ने वायु गुणवत्ता की मौजूदा प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए और वायु गुणवत्ता में गिरावट को रोकने के लिए निजी वाहनों की पार्किंग फीस दोगुनी कर दी है। 31 जनवरी तक पार्किंग फीस दोगुनी ली जाएगी। इसके पीछे नई दिल्ली इलाके में निजी वाहनों का आवागमन कम करने की संशा है।

एनडीएमसी ने अपनी पार्किंग में निजी वाहन खड़े की फीस दोगुनी करने का आदेश सोमवार को जारी किया। एनडीएमसी ने तर्क दिया है कि आयोग ने 21 अक्टूबर को ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान के संशोधित कार्यक्रम को तत्काल प्रभाव से लागू करने के लिए निर्देश जारी किए थे। इसके तहत निजी परिवहन को हतोत्साहित करने के लिए पार्किंग शुल्क बढ़ाने का प्रावधान किया गया था।



आयोग की उप समिति ने चार नवंबर को दिल्ली का औसत एक्यूआई 415, पांच नवंबर को औसत एक्यूआई 454 मिला। इतना ही नहीं, अत्यधिक प्रतिकूल मौसम और जलवायु परिस्थितियों के कारण एक्यूआई के बढ़ने और गंभीर श्रेणी में बने रहने की उम्मीद जताई गई। एनडीएमसी की ओर से एक घंटे की कार की पार्किंग फीस 20 रुपये और दुपहिया की पार्किंग फीस 10 रुपये ली जाती है। इसके बाद प्रति घंटे कार की पार्किंग फीस में 20 रुपये व दुपहिया की पार्किंग फीस में 10 रुपये बढ़ोतरी का प्रावधान है, मगर पांच घंटे के बाद पार्किंग फीस में बढ़ोतरी का प्रावधान नहीं है। लिहाजा अब पार्किंग में एक घंटे तक कार खड़ी करने पर 40 रुपये देने होंगे और दुपहिया खड़ा

करने पर 20 रुपये फीस देनी पड़ेगी। चार से अधिक समय तक कार की फीस दो सौ रुपये और दोपहिया की सौ रुपये चुकानी पड़ेगी। जहांगीरपुरी रहा सबसे प्रदूषित इलाका प्रदूषण का स्तर बढ़ने से लोगों को आंखों में जलन व सांस लेने में परेशानी हुई। जहांगीरपुरी में सबसे अधिक वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 419 दर्ज किया गया। इसके बाद मुंडका व आरके पुरम दूसरे ऐसे इलाके रहे, जहां एक्यूआई 400 के पार दर्ज किया गया। दिलशाद गार्डन में सबसे कम एक्यूआई 251 दर्ज किया गया। शहर के 29 इलाकों में हवा खराब श्रेणी में दर्ज की गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार

सोमवार को तीन इलाकों में हवा गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। इसमें जहांगीरपुरी में 419, मुंडका व आरके पुरम में 403 एक्यूआई दर्ज किया गया। वहीं, रोहिणी के अलावा 29 इलाकों में वायु सूचकांक बेहद खराब श्रेणी में दर्ज किया गया। इनमें रोहिणी में 400 वजीरपुर में 398, आईजीआई एयरपोर्ट टर्मिनल 3 व एनएसआईटी द्वारका में 397, नरेला में 398, बवाना में 394 व आया नगर में 393 एक्यूआई दर्ज किया गया, यह बेहद खराब श्रेणी है। मौसमी बदलाव के चलते दो इलाकों में वायु गुणवत्ता खराब श्रेणी में दर्ज की गई। इसमें विवेक विहार 293 व दिलशाद गार्डन में 251 एक्यूआई दर्ज किया गया।

दिवाली पर दिल्ली बेदम, बैन के बावजूद आतीशबाजी



परिवहन विशेष। एसडी सेठी। राजधानी दिल्ली में फैली प्रदूषण की चादर और सुप्रीम कोर्ट के सख्त आदेश के बावजूद रातभर बम्बबारी ने तमाम कायदे-कानून की धज्जियों को धुंध में उड़ा दिया। दिल्ली समेत पूरे एनसीआर में रातभर आतिशबाजी के बीच कहीं भी कानूनी खाकी का खौफ दिखाई नहीं दिया। आम लोग बेखौफ हो भारी-भरकम आवाजों को धधधडाते रहे। उन्हें किसी की बीमारी, नींद, और सांसों तक का सरोकार नहीं रहा। लोगों ने सारी पार्बंदियों को दरकिनार कर करोड़ों

रुपये के पटाखों को फूंक डाला। सूत्र के मुताबिक पटाखों का बड़ा रेंज बाजरो में उपलब्ध थे। जिनमें कलर कोटी, अनार, कलर स्प्रेड, रोलर कबूतर से लेकर मल्टी शॉट रेंज के पटाखे धडल्ले से बिक रहे थे। सुबह सफाई के वक्त गली-गली चिथड़ों में बिखरे बम्ब, अनार, रॉकेट के खोल, लडी बम्बों के कूड़े के ढेरों पर झाड़ू फेरते हुए एमसीडी के सफाई कर्मी तक कोर्ट-कचहरी, कानून व्यवस्था पर जबरदस्त माखौल उठाते दिखाई दिए। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल

रॉय जहां दो दिन पहले तक बिगड़े प्रदूषण को बारिश ने धोकर 100 के नीचे तक आ जाने से खासा खुश थे। वहीं दिवाली के बाद एक्यूआई के 900 के पार होने पर उनकी खुशी काफूर हो गई है। दिल्ली-एनसीआर समेत शहरों के आसमान में जबरदस्त धुंध की चादर ने एक्यूआई नैरिकॉडों में बढत हासिल की। जिससे लोगों की आंखों में जलन, सांसों में चुभन, और खांसी समेत टीबी-दमा पेशंटों को अस्पतालों में आक्सीजन के सपोर्ट्स पर आना पड गया।

दिल्ली-एनसीआर में दिवाली में दीये-पटाखे से 220 से अधिक घायल, 10% गंभीर रूप से झुलसे

झुलसे लोगों में करीब 10 फीसदी मरीज गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें कुछ ज्यादा गंभीर थे जिन्हें तुरंत आईसीयू में भर्ती करना पड़ा। वहीं कुछ मरीजों की हाथों की उंगलियां तक पटाखे से उड़ गईं।

दिवाली में पटाखे व दीये जलाने पर 220 से अधिक लोग घायल हो गए। इन घायलों को उपचार के लिए एम्स, सफदरजंग, डॉ. राम मनोहर लोहिया, लोकनायक, जीटीबी, डीडीयू, संजय गांधी, बाबा साहेब अंबेडकर, बाबू जगजीवन राम, जग प्रवेश हॉस्पिटल सहित दिल्ली के अन्य सरकारी व निजी अस्पतालों में लाया गया।

इनमें से करीब 10 फीसदी मरीज गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें कुछ ज्यादा गंभीर थे जिन्हें तुरंत आईसीयू में भर्ती करना पड़ा। वहीं कुछ मरीजों की हाथों की उंगलियां तक पटाखे से उड़ गईं। जबकि कई को गंभीर रूप से चोट लगी। डॉक्टरों की माने तो इस बार पटाखे और दीये से जलने वाले वालों की संख्या काफी ज्यादा है। इसके अलावा सजावट के दौरान बिजली का करंट व अन्य से भी घायल होकर लोग अस्पताल पहुंचे हैं। दिल्ली में पिछले साल भी 216 से अधिक लोग घायल होकर अस्पताल पहुंचे थे।

एसएम 31 मरीज पहुंचे
एसएम से मिली जानकारी के मुताबिक, दिल्ली में 11 और 12 नवंबर को कुल 31 मरीज घायल होकर अस्पताल पहुंचे। इनमें से दीये से जलने वाले आठ मरीज थे। इनमें से पांच को आईसीयू में रखा गया। जबकि तीन को ओपीडी में देखने के बाद छुट्टी दी गई। वहीं पटाखे से 21 मरीज घायल हुए। इसमें से छह मरीज को



आईसीयू में भर्ती करना पड़ा। एक को वार्ड में और 14 मरीज को सामान्य ओपीडी में देखने के बाद छुट्टी दे दी गई। वहीं बिजली का करंट लगने से घायल होकर दो मरीज पहुंचे और दोनों को आईसीयू में भर्ती किया गया।

सफदरजंग अस्पताल में 100 मरीज पहुंचे

सफदरजंग अस्पताल में घायल होकर 100 मरीज पहुंचे। इनमें 86 मरीज कम घायल होकर और 14 मरीज गंभीर रूप से घायल होकर पहुंचे। इनमें सबसे ज्यादा पुरुष 78 और महिला 22 रही। इनमें 12 साल से कम 21 मरीज और 12 साल से अधिक 77 रहे। इनमें दिया से जलने वाले 18 और पटाखे के 82 मरीज हैं। इनमें

दिल्ली से 93 और दिल्ली के बाहर से 7 मरीज हैं।

डॉक्टर राम मनोहर लोहिया अस्पताल में 30 मरीज पहुंचे

वहीं डॉक्टर राम मनोहर लोहिया अस्पताल में करीब 30 मरीज पहुंचे। इनमें करीब 40 फीसदी बच्चे हैं। इनमें से अधिकतर मरीजों को सामान्य चिकित्सा के बाद छुट्टी दे दी गई। जबकि तीन बच्चों को भर्ती किया गया। बताया जा रहा है कि इन तीन बच्चों के हाथ में पटाखा फट गया था। इस बच्चों की उम्र 21, 17 और 7 साल है। ऐसा बताया जा रहा है इनकी अंगुली भी उड़ गई, हालांकि उपचार पूरा होने के बाद पता चलेगा कि कुल कितना नुकसान हुआ है।

पिछली साल की तुलना में दिवाली पर पीएम 2.5 कणों का स्तर 45 प्रतिशत बढ़ा, PM10 में भी इजाफा

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) के एक विश्लेषण के मुताबिक, पिछले साल की तुलना में दिवाली पर फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले पीएम 2.5 कणों का स्तर 45 प्रतिशत और पीएम 10 कणों का स्तर 33 प्रतिशत बढ़ गया है।



दिल्ली में तमाम बंदिशों के बावजूद दिवाली के अगले ही दिन हवा सांस लेने लायक नहीं रही। कुछ इलाकों में 900 के पार एक्यूआई रहा। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) के एक विश्लेषण के मुताबिक, पिछले साल की तुलना में हवा में दिवाली पर फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले पीएम 2.5 कणों का स्तर 45 प्रतिशत और पीएम 10 कणों का स्तर 33 प्रतिशत बढ़ गया है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि राजधानी में लगभग सभी वायु गुणवत्ता की निगरानी करने वाले स्टेशनों ने पिछली साल की तुलना में दिवाली के दिन प्रदूषण के स्तर में इजाफा दर्ज किया है। गत रविवार यानी दिवाली को दिल्ली में 24 घंटे का पीएम10 का औसत स्तर 430 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा, जो पिछले साल के 322 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से अधिक है, साथ ही 2021 में 748 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर था। इसी तरह 24 घंटे के दौरान पीएम2.5 का औसत स्तर 314 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज हुआ, जबकि पिछले साल यह 217 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा था। 12021 में 607 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर था।

नोएडा में दिवाली की रात रफ्तार का कहर

पटाखे फोड़ रहे तीन लोगों को कार ने कुचला

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा सेक्टर-119 स्थित एल्डिको सोसायटी के बाहर आतिशबाजी कर रहे तीन लोगों को एक चालक टक्कर मारकर फरार हो गया। घायलों का प्राइवेट अस्पताल में उपचार चल रहा है। सूचना पर सेक्टर 113 कोतवाली पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। दीपावली पर हुई इस घटना के बाद पूरे परिवार और सोसायटी में मातम छाया गया। घायल अपने घर से टहलने निकले थे।

नोएडा। सेक्टर-119 स्थित एल्डिको सोसायटी के बाहर आतिशबाजी कर रहे तीन लोगों को एक चालक टक्कर मारकर फरार हो गया। घायलों का प्राइवेट अस्पताल में उपचार चल रहा है। सूचना पर सेक्टर 113

कोतवाली पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

परिजनों का कहना है कि 72 वर्षीय विजय कुमार, उनके 40 वर्षीय दामाद सौरभ सिंह और उनके पड़ोस में रहने वाली आठ साल की बच्ची सेक्टर-119 में स्थित एल्डिको आमंत्रण हाउसिंग सोसायटी के बाहर दीपावली की रात टहल रहे थे। तभी एक काले रंग की कार आई और तीनों को कुचल दिया। विजय कुमार की हालत नाजुक है, जबकि सौरभ सिंह और बच्चों की हालत खतरे से बाहर है।

दीपावली पर हुई इस घटना के बाद पूरे परिवार और सोसायटी में मातम छाया गया। घायल अपने घर से टहलने निकले थे।

जल्द होगी आरोपितों की गिरफ्तारी
एडिशनल डीसीपी नोएडा शक्ति अवस्थी का कहना है कि सेक्टर-119 स्थित एल्डिको सोसायटी के बाहर आतिशबाजी कर रहे तीन लोगों को टक्कर मारकर कार चालक फरार होने की घटना के वायरल वीडियो का संज्ञान लेते हुए चार टीम गठित की है। जल्द ही आरोपित को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।



दिवाली की शाम दो हत्याओं से दहला बुलंदशहर: चरित्र पर शक में पत्नी का कत्ल... रुपयों के विवाद में युवक का मर्डर

यूपी का बुलंदशहर जिला दीपावली की शाम दो हत्याओं से दहल उठा। नगर कोतवाली इलाके में युवक ने पत्नी की शक में हत्या कर दी। देहात कोतवाली के गांव ताजपुर में शराब के रुपयों को लेकर हुए विवाद में युवक की हत्या कर दी गई।

दीपावली के त्योहार पर रविवार देर शाम बुलंदशहर के नगर और देहात कोतवाली इलाके में एक महिला समेत दो लोगों की हत्या का मामला सामने आया है। नगर में पति ने ही पत्नी की गोली मारकर हत्या कर दी। वहीं देहात कोतवाली के गांव

ताजपुर में शराब के रुपयों को लेकर हुए विवाद में एक युवक की हत्या कर दी गई। पुलिस दोनों मामलों की जांच में जुट गई है।

केस 1
नगर कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला देवीपुरा निवासी 50 वर्षीय महिला सुशीला रविवार देर शाम घर पर ही पूजा की तैयारी कर रही थी। रात करीब 9:30 बजे उसका पति घर आया और लाइसेंस राइफल से पत्नी के सीने पर गोली मार दी। वारदात के बाद आरोपी पति को पुलिस ने मौके से ही गिरफ्तार कर लिया।

साथ ही आलाकत्ल बरामद किया है। पृष्ठताछ में आरोपी ने अपनी पत्नी पर गंभीर आरोप लगाए, उसका कहना था कि इसी के चलते उसने पत्नी की हत्या की है। पुलिस ने महिला का शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं, मृतका के परिजनों का

रो-रो कर बुरा हाल है। हालांकि, मामले में अभी तक कोई तहरीर नहीं दी गई है।

केस 2
देहात कोतवाली क्षेत्र के गांव ताजपुर निवासी बंटी दिल्ली में रहकर नौकरी करता था। दीपावली त्यौहार के चलते वह अपने गांव आया हुआ था। बताया गया कि रविवार देर शाम गांव में ही उसका एक व्यक्ति से शराब के पैसों को लेकर विवाद हुआ था। इसी के चलते आरोपी व्यक्ति ने धारदार हथियार से उसके गले पर वार कर दिया।

लोगों को आता हुआ देख आरोपी मौके से भाग निकला। परिजनी ने घायल बंटी को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू कर दी है। हालांकि, अभी तक आरोपी को पकड़ नहीं जा सका है।



लोहे की नाल से दोस्त के पीछे किया धमाका, फटी टांग की नस; इलाज के दौरान अस्पताल में मौत

दिवाली की रात करीब साढ़े 10 बजे लोहे की नाल से गंदक और पोटाश से पड़ोसी प्रदीप ने दोस्त अफजाल के पीछे से धमाका कर दिया। जिसमें वह घायल हो गया। स्थानीय लोगों ने तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती किया।



लंकरोड थाना क्षेत्र के झंडापुर में दिवाली की रात करीब साढ़े 10 बजे लोहे की नाल से गंदक और पोटाश से पड़ोसी प्रदीप ने दोस्त अफजाल के पीछे से धमाका कर दिया। इस शख्स की उम्र 35 वर्ष बताई जा रही है। जिससे अफजाल की जांच की नस

फट गई और खून ज्यादा बह गया। स्थानीय लोगों ने तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती किया।

जहां उपचार के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने घटना की सूचना मिलने पर शव कब्जे में मिलकर जांच शुरू की। घटनास्थल पर पुलिस से

सीसीटीवी फुटेज कब्जे में ले लिया है। वीडियो में प्रदीप दोस्त अफजल की जांच में लोहे की नली से धमाका करता नजर आ रहा है। घटना के बाद प्रदीप फरार बताया जा रहा है। उसकी तलाश में पुलिस जगह जगह दबिश दे रही है।

आदित्य मॉल में लगी आग, पहली मंजिल पर भरा धुआं; सभी को निकाला गया सुरक्षित



गाजियाबाद स्थित इंदिरापुरम के आदित्य मॉल में सोमवार शाम आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। आगजनी की घटना मॉल की पहली मंजिल पर हुई।

गाजियाबाद स्थित इंदिरापुरम के आदित्य मॉल में सोमवार शाम आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। आगजनी की घटना मॉल की पहली मंजिल पर हुई। घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची दमकल विभाग की टीम ने कड़ी मशकत के बाद आग

पर काबू पा लिया। बताया जा रहा है कि शॉर्ट सर्किट के कारण यह आग लगी थी।

राहत की बात यह रही कि हादसे में किसी को किसी प्रकार की चोट नहीं आई। सभी को वक्त रहते सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। हालांकि कुछ देर के लिए पहली मंजिल पर धुआं भर जाने से अंदर लोग काफी भयभीत नजर आए।

मॉल के अंदर दूसरे माले पर मल्टीप्लेक्स बने हुए हैं, जहां घटना के वक्त काफी संख्या में लोग फिल्म

देख रहे थे। आगजनी की घटना के बाद प्रबंधन ने पूरे सिनेमाघर को खाली करा लिया। हालांकि इस दौरान सिडियों से नीचे उतरते वक्त लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। लोगों ने बताया कि वहां लाइट नहीं है, अंधेरे में ही नीचे उतरना पड़ा। साथ ही बाहर निकलने का मार्ग दिखाने वाले चिन्ह भी दीवारों पर अंकित नहीं थे। ये हमारी जिंदगियों के साथ खिलवाड़ा है। इस लापरवाही पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।



डॉ. रमेश ठाकुर

भारत में कैंसर रोगियों के आंकड़ों में बीते कुछ वर्षों में तेजी से उछाल आया है। जबकि, एक वक्त ऐसा भी था। जब, मात्र कुछ ही लाख कैंसर रोगी पूरे देश में होते हैं। अब ये आंकड़ा कोई एकाध लाख तक नहीं, बल्कि कई लाखों में जा पहुंचा है।

आमजन में अक्सर ऐसी धारणाएं रही हैं कि कैंसर मुख्यतः तंबाकू, खैनी-गुटखा या शराब के सेवन से ही होता है। पर, कैंसर अब इन वजहों तक ही सीमित नहीं रहा? इस खतनाक बीमारी ने बड़ा विस्तार ले लिया है। कैंसर अब प्रदूषण के चलते भी विशाल मात्रा में होने लगा है। वायु प्रदूषण से सिर्फ अस्थमा, हृदय संबंधी डिजीज, स्किन एलर्जी या आंखों की बीमारियां ही नहीं होती, बल्कि जानलेवा कैंसर भी होले लगा है। इसलिए यहां जरूरी हो जाता है कि वायु प्रदूषण से फैलने वाले कैंसर के प्रति ज्यादा से ज्यादा देशवासियों को जागरूकता किया जाए और प्रत्येक हथकंडों को अपनाकर घरों-घरों तक जागरूकता फैलानी चाहिए। इस काम में सरकारों के साथ-साथ आमजन को भी भागीदारी निभानी होगी। धुंध, प्रदूषित काले बादल व प्रदूषण की मोटी चादर इस वक्त कई शहरों पर चढ़ी हुई है जिसमें दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र सबसे अव्वल स्थान पर है जहां का एक्वआई लेबर गंभीर

स्थिति को भी छलांग लगा चुका है। दिल्ली के अलावा देश के बाकी महानगरों का भी हाल ज्यादा अच्छा नहीं है, वहां भी लोगों को सांस लेना दूभर हो रहा है। अस्पतालों में मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है।

बहरहाल, कैंसर अब नए-नए रूप में भ्रम रहा है जिसमें दूषित वायु प्रदूषण अहम भूमिका में है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो वृषिकात और दमघोंटू प्रदूषण कई तरीके से कैंसर को जन्म दे रहा है। रिपोर्ट्स बताती हैं कि प्रदूषण जब शरीर में घुसता है, तो वो सबसे पहले अंदरूनी कोशिकाओं यानी डीएनए पर प्रहार करके उन्हें डेमेज करता है जो आगे चलकर कैंसर का प्रमुख कारण बनता है। इसके अलावा प्रदूषण से शरीर में इंप्रोटेमेशन भी बढ़ता है और इम्यून सिस्टम को बिगाड़ता है। प्रदूषण को लेकर जो स्थिति इस वक्त समूचे हिंदुस्तान में बनी है। ऐसे में हल्के-फुल्के मरीजों के लिए ये वक्त बहुत ही खतरनाक है। ऐसे मरीजों का वायु प्रदूषण के संपर्क में आने का मतलब है कैंसर, स्ट्रोक, श्वसन, हृदय संबंधी रोग और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं को दावत देना? डब्ल्यूएचओ की पिछले साल की एकरिपोर्ट इसी माह नवंबर में आई थी जिसमें बताया गया था कि वायु प्रदूषण से पूरे संसार में प्रतिवर्ष लगभग सात मिलियन मौतें होती हैं जिसमें भारत को दूसरे स्थान पर रखा था। स्थिति इस वर्ष भी भंयकर है।

हिंदुस्तान में पिछले तीन वर्षों में कैंसर से अपनी जान गंवाने वालों की संख्याओं पर नजर डालें तो, सन 2020 में 7,70,230 मौतें थी। जो 2021 में बढ़कर 7,89,202 हुईं। वहीं, 2022 में यानी पिछले साल भारत में

कैंसर से मरने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ, संख्या बढ़कर 8,08,558 पर पहुंच गई। इस साल का आंकड़ा दो महीने बाद आया, निश्चित रूप से वो भी डरावना ही होगा। कैंसर को लेकर जागरूकता की कोई कमी नहीं है। केंद्र सरकार से लेकर सभी राज्य सरकारों की जागरूकता फैलाने में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। लेकिन कैंसर है कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा। चिकित्सकों की मानें तो कार्सिनोजेन यानी कैंसर जनक जो कैंसर फैलाने वाला पदार्थ है जो तंबाकू, धुआं, पर्यावरण, वायरस किसी से भी हो सकता है। मौजूदा कैंसर ज्यादातर दूषित वातावरण से ही होने लगा है। बढ़ते कैंसर को लेकर जितना आमजन परेशान हैं, उतनी ही हुकूमतें भी दुखी हैं।

चलिए बताते हैं कि भारत में 'नेशनल कैंसर जागरूकता' का आरंभ कब हुआ। सितंबर 2014 में, राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस की शुरुआत पहली बार भारत में तबके संघर्ष की शुरुआत हुई। वैसे इस दिवस की हर्षवर्धन द्वारा हुई। तब उन्होंने एक समिति का गठन किया और निर्णय लिया कि विभिन्न किस्म के होने वाले कैंसरों की गंभीरता, उनके लक्षणों और उपचार के बारे में जागरूकता फैलाई जाएगी और प्रत्येक वर्ष नवंबर की 7 तारीख को 'राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस' मनाया जाया करेगा। तभी से इस खास दिवस की शुरुआत हुई। वैसे इस दिवस की प्रासंगिकता अब और बढ़ गई है। क्योंकि प्रदूषण कैंसर का कारण बन रहा है, इसका भी प्रचार करना बहुत जरूरी हो जाता है। वायु प्रदूषण से उत्पन्न कैंसर के पहला बचाव तो

यही है, कि धुंध-धुआं वाले स्थानों पर अपने मुंह पर मास्क लगाकर रखें और वहां से हटने के बाद अपने हाथों और मुंह को साबुन से धोएं?

भारत में कैंसर रोगियों के आंकड़ों में बीते कुछ वर्षों में तेजी से उछाल आया है। जबकि, एक वक्त ऐसा भी था। जब, मात्र कुछ ही लाख कैंसर रोगी पूरे देश में होते हैं। अब ये आंकड़ा कोई एकाध लाख तक नहीं, बल्कि कई लाखों में जा पहुंचा है। नए कैंसरों के मामले तो बेहताशा ही बढ़ें हैं। महानगरीय क्षेत्रों में कैंसर रोगियों की संख्या देखकर रांगटे खड़े होते हैं। जबकि, ग्रामीण क्षेत्रों के हालात अब थोड़े बहुत संतोषजनक हैं। तंबाकू-सिगरेट का बढ़ता उपयोग भी एक कारण है और हमेशा से रहा भी है। दुख इस बात का है कि महिलाएं भी अब पुरुषों के मुकाबले स्मॉकिंग करने में पीछे नहीं रहती। खूब सुझा मारती हैं। यही कारण है कि सन 1995 और 2025 के बीच, तंबाकू और स्मॉकिंग से संबंधित कैंसर की रुग्णता में वृद्धि हुई है। इन आंकड़ों को देखकर हमें निश्चित से सार्वजनिक स्वास्थ्य के मामलों पर गंभीर होना पड़ेगा? 'राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस' रोगों के जोखिमों उनके कारकों, जीवन गुणवत्ताओं को प्रभावित करने वाले सामान्य कैंसर और उनके लक्षणों के प्रति हमें चेताता है। उनका हमें अनुसरण करना होगा। स्वास्थ्य के प्रति हमें कतई लापरवाह नहीं होना चाहिए, चिकित्सकों की गाइडलाइन्स को फॉलो करना होगा और समय-समय पर लगने वाले सरकारी हेल्थ कैंपों में पहुंचकर अपने संपूर्ण शरीर का चिकित्सीय परीक्षण भी करवाना चाहिए।

चौथी जेनरेशन की Maruti Suzuki Swift टेस्टिंग के दौरान हुई स्पॉट, जानें संभावित फीचर्स के बारे में

2024 Maruti Suzuki Swift को पहले की तरह 1.2 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड के-सीरीज पेट्रोल इंजन मिलेगा। जनकारों का कहना है कि इस पावरट्रेन को लो-स्पेक ट्रिम्स में पेश किया जाएगा। वहीं इसे पूरी तरह से नया 1.2 लीटर 3-सिलेंडर स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड पेट्रोल इंजन दिया जा सकता है जिसे टोयोटा के सहयोग से विकसित किया गया है। इसे पहले भी विदेशी धरती पर कई बार टेस्टिंग के दौरान देखा गया है।

मारुति सुजुकी स्विफ्ट मारुति की पॉपुलर कारों में से एक है। यह गाड़ी जल्द ही चौथे जेनरेशन में अपडेट होने के लिए तैयार है।

चौथी जेनरेशन की मारुति सुजुकी स्विफ्ट ने 2023 जापान मोबिलिटी शो में कॉन्सेप्ट फॉर्म में अपनी वैश्विक शुरुआत की। अब, कुछ ही दिनों बाद, कार को पहली बार भारत में परीक्षण के दौरान देखा गया है। आइये जानते हैं इससे जुड़े संभावित बदलावों के बारे में।

2024 Maruti Suzuki Swift बदलाव

नई पीढ़ी की स्विफ्ट को पहले भी विदेशी धरती पर कई बार टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। कार के इंटीरियर और एक्सटीरियर में कई अपडेटेड हो वाले हैं। वहीं, इसकी इक्विपमेंट लिस्ट को भी पूरी तरह से अपडेट किया जाएगा। उम्मीद है कि अपडेटेड Swift में फिर से डिजाइन किया गया फ्रंट फेंडिशिया, नए एलईडी हेडलैम्प डीआरएल और एक अपडेटेड बम्पर मिलता है। इसमें नए डिजाइन किए गए अलॉय व्हील, अपडेटेड एलईडी टेल लैंप और बम्पर वगैरह भी मिलेंगे। डायमेशनल बदलावों के साथ नई Swift अपडेटेड लाइटवेट हार्टेक प्लेटफॉर्म पर आधारित हो सकती है।

कितना दमदार होगा इसका इंजन ?

2024 Maruti Suzuki Swift को पहले की तरह 1.2 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड के-सीरीज पेट्रोल इंजन मिलेगा। जनकारों का कहना है कि इस पावरट्रेन को लो-स्पेक ट्रिम्स में पेश किया जाएगा। वहीं इसे पूरी तरह से नया 1.2 लीटर, 3-सिलेंडर स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड पेट्रोल इंजन दिया जा सकता है, जिसे टोयोटा के सहयोग से विकसित किया गया है। दावा किया गया है कि नई स्विफ्ट 1 लीटर पेट्रोल में 35 से 40 किमी प्रति लीटर का माइलेज देने में सक्षम होगी। हालांकि इस गाड़ी से जुड़ी सभी खास जानकारी कंपनी जब इसे लॉन्च करेगी तभी सामने आएगी।



टोयोटा की नई कार के लिए करना पड़ेगा इंतजार, नवंबर 2023 में हाईराइडर सीएनजी और रियूमियोन सीएनजी पर तगड़ा वेटिंग पीरियड



टोयोटा की लेटेस्ट एमपीवी के सीएनजी वर्जन की डिमांड इसके स्टैंडर्ड वर्जन से ज्यादा है। रूमियन सीएनजी पर वेटिंग पीरियड 18 महीने या डेढ़ साल तक जा सकती है यह इस बात पर निर्भर करता है कि खरीदार ने इसे कहाँ बुक किया है। वहीं इनोवा हाईक्रॉस के स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट का वेटिंग पीरियड 15 महीने तक बढ़ गया है।

नई दिल्ली। अगर आप इस महीने टोयोटा की नई कार घर लाने की सोच रहे हैं, तो इससे पहले कंपनी के प्रोडक्ट्स पर होने वाले लंबे वेटिंग पीरियड के बारे में जान लीजिए। कार निर्माता ने अपने सभी मॉडलों के लिए अस्थायी प्रतीक्षा अवधि का खुलासा किया है।

कुछ ऐसी कारें हैं, जिनकी डिलीवरी के लिए आपको अगली दिवाली तक का इंतजार करना पड़ सकता है। आइए, Rumion CNG, Urban Cruiser HyRyder CNG, Innova HyCross hybrid और Toyota Vellfire जैसी कारों की प्रतीक्षा अवधि के बारे में जान लेते हैं।

Toyota Rumion CNG

टोयोटा की लेटेस्ट एमपीवी के सीएनजी वर्जन की डिमांड इसके स्टैंडर्ड वर्जन से ज्यादा है। इसे इस साल अगस्त में 10.29 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की शुरुआती कीमत पर लॉन्च किया गया था और ये पेट्रोल और सीएनजी वेरिएंट में बेची जाती है। रूमियन सीएनजी पर वेटिंग पीरियड 18 महीने या डेढ़ साल तक जा सकती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि खरीदार ने इसे कहाँ बुक किया है।

हाई डिमांड के कारण, टोयोटा को सितंबर में रूमियन ई-सीएनजी संस्करण के लिए अस्थायी रूप से बुकिंग रोकनी पड़ी थी। रूमियन को मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन विकल्पों के साथ 1.5-लीटर के-सीरीज पेट्रोल इंजन से पावर मिलती है।

Toyota Urban Cruiser HyRyder CNG

टोयोटा की कॉम्पैक्ट एसयूवी अर्बन क्रूजर हायराइडर के सीएनजी संस्करण की भारत में जापानी कार निर्माता द्वारा पेश किए जाने वाले मॉडलों में दूसरी सबसे लंबी प्रतीक्षा अवधि है। कार निर्माता के मुताबिक, E-CNG HyRyder SUV को घर ले जाने के लिए 16 महीने तक का इंतजार करना पड़ सकता है। इस साल जनवरी में, टोयोटा ने HyRyder SUV का CNG अवतार में 13.23 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की शुरुआती कीमत पर पेश किया था।

Toyota Innova HyCross hybrid

इनोवा हाईक्रॉस के स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट का वेटिंग पीरियड 15 महीने तक बढ़ गया है। ये एमपीवी, टोयोटा की भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार है और इसे पेट्रोल व स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड दोनों ही वेरिएंट में पेश किया गया है। टोयोटा ने पिछले साल दिसंबर में भारत में इनोवा हाईक्रॉस को स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट के साथ लॉन्च किया था, जिसकी कीमत 24.01 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) थी।

Toyota Vellfire

भारत में जापानी ऑटो दिग्गज के सबसे महंगे मॉडल वेलफायर पर भी लंबी प्रतीक्षा अवधि है। टोयोटा के अनुसार, खरीद के स्थान के आधार पर, नई वेलफायर की डिलीवरी के लिए लगभग 15 महीने तक इंतजार करना पड़ सकता है।

Reliance Jio की इस डिवाइस से बेस वेरिएंट में मिलेंगे लगजरी कार जैसे स्मार्ट फीचर्स,

रिलायंस ने JioMotive obd device लॉन्च की है। एक बार इंस्टॉल हो जाने पर डिवाइस ई-सिम का उपयोग करके Jio नेटवर्क से कनेक्ट हो जाता है जिससे अलग सिम कार्ड या डेटा प्लान की आवश्यकता नहीं होती है। आइए जान लेते हैं कि जिओ की ये डिवाइस कितनी खास है इसकी कीमत क्या है और ये आपके लिए कितनी उपयोगी साबित हो सकती है।

नई दिल्ली। Reliance Jio ने हाल ही में एक नया पोकेट-साइज, आसानी से इंस्टॉल होने वाला OBD (ऑन-बोर्ड डायग्नोस्टिक्स) डिवाइस लॉन्च किया है, जो किसी भी कार को स्मार्ट व्हीकल में बदल सकता है। ये एक प्लग एंड प्ले डिवाइस है और कार के ओबीडी पोर्ट में प्लग हो जाता है, जो आमतौर पर डैशबोर्ड के नीचे स्थित होता है। एक बार इंस्टॉल हो जाने पर, डिवाइस ई-सिम का उपयोग करके Jio नेटवर्क से कनेक्ट हो जाता है, जिससे अलग सिम कार्ड या डेटा प्लान की आवश्यकता नहीं होती है। आइए, जान लेते हैं कि जिओ की ये डिवाइस कितनी खास है, इसकी कीमत क्या है और ये आपके लिए कितनी उपयोगी साबित हो सकती है।

JioMotive की कीमत

JioMotive रिलायंस डिजिटल की आधिकारिक वेबसाइट पर 4,999 रुपये में उपलब्ध है। इसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म Amazon और JioMart से भी खरीदा जा सकता है। पुरानी कारों और बेस मॉडल्स में जिओ की ये डिवाइस काफी कारगर साबित होने वाली है।

JioMotive की खासियत

JioMotive की मदद से आप उन एडवांस फीचर्स का उपयोग कर सकते हैं, जो नई गाड़ियों के टॉप-स्पेक मॉडल्स में पेश किए जाते हैं। आइए, इसके 5 सबसे बड़े फायदों के बारे में जान लेते हैं।

JioMotive की मदद से आप रियल टाइम में अपनी कार के स्थान को ट्रैक कर सकते हैं। ये कार के ठिकाने की निगरानी करने, परिवार और दोस्तों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और चोरी को रोकने में सहायक हो सकता है।

Geo-Fencing

JioMotive के साथ यूजर्स, मैप पर वर्चुअल बाउंड्री सेट कर सकते हैं। जब उनकी कार इन क्षेत्रों में प्रवेश करेगी या बाहर निकलेगी तो उन्हें अलर्ट प्राप्त होगा, जिससे आपका वाहन सुरक्षित रहेगा।

Remote Diagnostics

JioMotive की मदद से आप दूर से ही कार के परफॉरमेंस और हेल्थ की निगरानी कर सकते हैं। इसकी मदद से आपके व्हीकल की मेटेनैस कॉस्ट भी कम होने वाली है।



डिजिटल कौशल से बढे रोजगार के मौके



डा. जयंती लाल भंडारी

रोजगार की बदलती हुई डिजिटल दुनिया में भारत पूरी तरह से अग्रणी की स्थिति में है। ऐसे में नई पीढ़ी को अच्छी अंग्रेजी, कम्प्यूटर-आदि डिजिटल, कोडिंग स्किल्स, कम्प्युनिकेशन स्किल्स, जनसंचार, वेब डिजाइन, कोशल बाजार अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन, क्लाउड कम्प्यूटिंग, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों से भी सुसज्जित किया जाना होगा। अब देश में स्थल ईडिया डिजिटल से कोशल, शिक्षा और उद्यमशीलता के लिए डिजिटल सार्वजनिक अवसरचना का पूरा लाभ लेते हुए नई पीढ़ी के लिए अधिक से अधिक रोजगार अवसर निर्मित किए जाने होंगे।

इन दिनों देश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और रोजगार से संबंधित विषयों पर प्रकाशित हो रही विभिन्न रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि देश में अर्थव्यवस्था के बढ़ने, डिजिटल विकास तथा गिग अर्थव्यवस्था के कारण ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर कम हो रही है और रोजगार के दर मौके बढ़ रहे हैं। हालांकि भी है रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के द्वारा प्रकाशित ताजा रिपोर्ट के मुताबिक इस वर्ष 2023 में ग्रामीण और शहरी दोनों ही जगहों पर बेरोजगारी दरों में कमी आई है। संगठित क्षेत्रों में भी वर्ष 2023 के सितंबर माह के बाद रोजगार की सबसे अच्छी स्थिति दिख रही है। रिपोर्ट के मुताबिक घरेलू मांग में लगातार मजबूती की बदौलत फैनलैन्ड इंडेक्स में रोजगार का पर्सेंज मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) 50 से ऊपर चल रहा है। इस इंडेक्स के 50 से ऊपर रहने का मतलब है कि रोजगार में सकारात्मक बढ़ोतरी हो रही है। अर्थव्यवस्थाओं के रोजगार संकेतकों के मुताबिक आने वाले महीनों में रोजगार में बढ़ोतरी जारी रहने की उम्मीद की जा रही है।

निश्चित रूप से कोशल और डिजिटल स्किल्स पर आधारित नए दौर के रोजगार के मौके छलांगे लगाकर बढ़ रहे हैं। 12 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोशल विकास मंत्रालय के द्वारा नई दिल्ली में आयोजित कोशल दीक्षा समारोह को वर्युअली संबोधित करते हुए कहा कि पिछले एक शतक में सरकार ने कोशल विकास व डिजिटल स्किल्स विकास में सबसे अधिक निवेश करके रोजगार निर्माण को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। यही कारण है कि देश में बेरोजगारी पिछले छह वर्षों के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी तेजी से कम हो रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि तेजी से बढ़ती भारत की अर्थव्यवस्था में युवाओं के लिए रोजगार की नई संभावनाएं पैदा हो रही हैं।



बाबू भारत के द्वारा कुशल मानव शक्ति का पालवर सेंटर बनने के जो प्रभावो कदम उठाए जा रहे हैं, उन्हें नसिर्त निमित्त नून दौर के रोजगार के अधिक मौकों से नई पीढ़ी लाभान्वित होगी । हाल ही में राष्ठीय सांख्यिकी कार्यालययन (एनएसओ) के द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक देश में पिछले छह वर्षों में बेरोजगारी दर छह फीसदी से घटकर ३.२ फीसदी पर आई गई है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी दर में बड़ी कमी आई है । निश्चित रूप से जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर घटने में महत्वात्ता गांधी राष्ठीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) की अहम भूमिका है, वहीं शहरी बेरोजगारी घटाने में कौशल विकास, सामाजिक और डिजिटल लिक्स्ती का अहम भूमिका है दिखाई दे रही है । उल्लेखनीय है कि देश में शहरी बेरोजगारी दर चालु वित्त वर्ष २०२३-२४ की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में ६.६ फीसदी प्रतिशत रह गई है, जबकि कोविड के दौरान वित्त वर्ष २०२१-२२ की अप्रैल-जून तिमाही में शहरी बेरोजगारी दर १२.६ प्रतिशत दर्ज की गई थी, उसके बाद से शहरी इलाकों में बेरोजगारी दर लगातार कम हो रही है। यदि हम कोरानाकाल के बाद शहरी रोजगार बढ़ने के परिदृश्य को देखें तो पाते हैं कि जहाँ एक ओर शहरी क्षेत्रों में गिंग इकोनॉमी में रोजगार छलगेगी लगाकर आगे बढ़ा है, वहीं कौशल और डिजिटल विकास की योजनाओं से युवाओं को सुसज्जित करके रोजगार के मौके बढ़ाए गए हैं । गिंग इकोनॉमी का मतलब है अनुबंध आधारित या अस्थायी रोजगार (गिंग वर्क) वाली अर्थव्यवस्था । गिंग अर्थव्यवस्था के तहत गिंग वर्कर प्रोजेक्टगत दर प्रोजेक्ट आधार पर काम करते हैं या सेवाएं

ते हैं और वे यह चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं।
कि वे कब, कहाँ और कितना काम करेंगे।
व्यापक तौर पर डिजिटलीकरण के प्रसार ने गिग
अर्थव्यवस्था को अभूतपूर्व ऊँचाइयों पर पहुँचा
दिया है। वस्तुतः गिग अर्थव्यवस्था डिजिटल
प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन मार्केटप्लेस से
संचालित होती है जो गिग वर्कर्स को खास तरह
की सेवाओं की तलाश करने वाले कस्टमर्स से
जोड़ती है। ये प्लेटफॉर्म बायर्स और सेलर्स के
बीच ट्रंज़ैक्शन को सुविधाजनक बनाते हैं। जहाँ
देखें देश की श्रेष्ठों में गिग अर्थव्यवस्था के तहत
रोजगार के मौके तेजी से बढ़ रहे हैं, वहीं देश में
कोशल और डिजिटल विकास से प्रसिध्दित
सरकारी योजनाओं से शिक्षित-प्रशिक्षित
युवाओं के लिए शहरों में अच्छे करिअर के मौके
बढ़े रहे हैं। चूँकि बड़ी संख्या में देश और दुनियाभर
की कार्यवाह गतिविधियाँ अब ऑनलाइन हो गईं
हैं और बड़े फ़ॉर्म हों (डब्ल्यूएलएन) करने
की प्रवृत्ति को व्यापक तौर पर मिली स्वीकृति से
आउटसोर्सिंग को बढ़ावा मिला है। भारत के
आईटी सेक्टर के द्वारा गुणवत्तापूर्ण सेवाओं से
वैश्विक उद्योग-कारोबार इकाइयों का भारत की
आईटी कंपनियों पर भारो बढ़ा है। इन दिनों
प्रकाशित हो रही वैश्विक रोजगार रिपोर्टों में
भारत की मौलिक प्रशिक्षण नई पीढ़ी के लिए
रोजगार के मौके बढ़ने की टिप्पणियों की जा रही
है। विश्व प्रसिद्ध मैकिजी ग्लोबल इंस्टीट्यूट के
द्वारा वैश्विक रोजगार रिपोर्ट में कहा गया है कि
जहाँ भारत में डिजिटल अर्थव्यवस्था में वर्षों
2025 तक ऑटोमेशन, रोबोटिक्स और
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के चलते करीब छहह
सकड़ें हों, वहीं इसकी वजह से करीब चार से
सकड़ें चार करोड़ परंपरागत नौकरियाँ समाप्त हो

रकती हैं। ऐसे में 2025 तक डिजिटलीकरण से करीब 2 करोड़ से अधिक नई नौकरियां निर्मित होने हूए दिखाई देंगी। इसमें कई ऐसी डिजिटल नौकरियां होंगी जिनके नाम तक हमने नहीं सुने हैं।

निश्चित रूप से भारत की डिजिटल स्किलड नई पीढ़ी के लिए अच्छे रोजगार के मौके देश के साथ-साथ दुनिया के विभिन्न देशों- अमेरिका, जापान, ब्रिटेन और जर्मनी आदि में औद्योगिक और कारोबार आवश्यकताओं में तकनीक और नवाचार के इस्तेमाल के कारण बढ़ते जा रहे हैं। इन क्षेत्रों में प्रमुख रूप से आईटी, हेल्थकेयर, नर्सिंग, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, फूड प्रोसेसिंग, जहाज निर्माण, विमानन, कृषि अनुसंधान, विकास, सेवा व वित्त आदि हैं।

रोजगार की बदलती हुई डिजिटल दुनिया में भारत पूरी तरह से लाभ की स्थिति में है। ऐसे में नई पीढ़ी को अच्छी अंग्रेजी, कम्प्यूटर-आईटी दक्षता, कोडिंग स्किल्स, कम्प्युनिकेशन स्किल्स, जनसंचार, वेब डिजाइन, कोशल बाजार अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन, क्लाउड कम्प्यूटिंग, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों से भी सुसज्जित किया जाना होगा। अरब देश में कल ईडिटा डिजिटल से कोशल, शिक्षा और उद्यमशीलता के लिए डिजिटल सावर्जनिक अवसंरचना का पूरा लाभ लेते हुए नई पीढ़ी के लिए अधिक से अधिक रोजगार अवसर निर्मित किए जाने होंगे। साथ ही देश में इस वर्ष 2023-24 से शुरू प्रधानमंत्री कोशल विकास योजना 4.0 के माध्यम से देश के युवाओं को निर्धारित किए गए तकनीक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में कोशल और प्रशिक्षण से सुसज्जित करके रोजगार की डार पर आगे बढ़ाना होगा।

देश के 80 करोड़ से अधिक गरीबों को 5 किलो मुफ्त अनाज अब आगामी 5 सालों तक भी मिलता रहेगा। खुद प्रधानमंत्री मोदी ने छत्तीसगढ़ चुनाव प्रचार के दौरान इसकी घोषणा की है। यह योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत है और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का भी हिस्सा है। यह योजना कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान मात्र तीन माह के लिए लागू की गई थी, लेकिन लगातार छठी बार इसकी सीमा बढ़ाई गई है। संयोग है अथवा राजनीति है कि जब भी मुफ्त अनाज बांटने की अवधि बढ़ाई गई, तब कोई न कोई चुनाव सामने होता था। प्रधानमंत्री और भाजपा ने इसी योजना के जरिए एक ऐसा लाभार्थी वर्गीकरण कर लिया है, जो उनके पक्ष में ही बोलता है। दूसरी योजनाओं की भी दालाथी-भूमिका पुष्टा की जा रही है। दरअसल इसी साल जनवरी, 2023 में मुफ्त अनाज की अवधि बढ़ाई गई, क्योंकि मई में कर्नाटक विधानसभा चुनाव थे। दिसंबर, 2021 में अवधि बढ़ाई गई, क्योंकि फरवरी, 2022 से पंजाब, उप्र, उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर में विधानसभा चुनाव होने थे। पंजाब छोड़ कर भाजपा चुनाव सभी राज्यों में विजयी हुई और सरकारें बनाई। नवम्बर, 2020 में मुफ्त अनाज बांटने की अवधि जून, 2021 तक की गई थी, क्योंकि मार्च-अप्रैल, 2021 में बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी में चुनाव थे। भाजपा बंगाल, केरल, तमिलनाडु सरीखे बड़े राज्यों में पराजित हुई।

हर चुनाव से पहले इस योजना की उल्लंघन का क्या? आचार संहिता का उल्लंघन' नहीं है? चुनाव योजना 2020 से निरंतर जारी है, लिहाजा प्रधानमंत्री किसी भी मौके पर समय-समय में बढ़ोतरी की घोषणा करने की स्वतंत्रता? बेबाक यह योजना 'राष्ट्रीय' है, लेकिन चुनाव वाले क्षेत्रों में औसत मतदाता एक हद तक प्रभावित तो होते हैं। बहरहाल मध्य सवालों पर तो चुनाव आयोग इन्हें सवालों और जरूरी महसूस हुआ, तो देश को भी बताएगा। दूरअलग राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून में अनाज मुहैया कराने के कई प्राधान हैं। मकसद है कि

कोई भी नागरिक भूखाना न सोने पाएगा। इसका भी एक इमनदार संकेत है कि कृषि जाना चाहिए। गरीबी-रेखा के नीचे वाले वगैरह को हर महीने 5 किलो अनाज प्रति पारिवारिक सदस्य सब्सिडी दरों पर अतिरिक्त किया जाता है। उसके अवधिकृत यह 5 किलो मुफ्त अनाज माहवार मुहैया कराया जाता है। इसमें गेहूं, चावल, एक किलो दाल या चना, नमक आदि होता है। इसे खाद्यान्न भी भारत सरकार लाखों करोड़ रुपय की सब्सिडी खर्च कर चुकी है। सरकार के शीर्ष प्रशासनिक अधिकारी प्रधानमंत्री मोदी को अर्थव्यवस्था के प्रति आगाह कर चुके हैं। उसके बावजूद इस बार पूरे 5 साल के लिए मुफ्त अनाज की अवधि बढ़ा दी गई है। इससे प्रति वर्ष 2 लाख करोड़ रुपय की अतिरिक्त सब्सिडी का बोझ बढ़ेगा। प्रधानमंत्री गरीबों के कल्याण और घर पेट को खाने की तुलना में सब्सिडी को क्षुद्र मानते हैं। वह खर्च आगामी विचार वर्ष के बजट में जोड़ा जाएगा। यह ऐसा मुद्दा है, जिस पर विपक्ष और बौद्धिक वर्ग सवाल तो करते हैं, लेकिन ज़मीन वगैरह नहीं कर पाते, क्योंकि यह 80 करोड़ से अधिक नागरिकों की भूख और खाद्यान्न से जुड़ा मुद्दा है। इससे गरीबी-उन्मुलन के दावों के विरोधाभास भी उभर कर सामने आते हैं। प्रधानमंत्री दावा करते रहे हैं कि उनका सरकार ने 13.5 करोड़ से ज्यादा लोगों को गरीबी की परिधि से बाहर निकाला है, जबकि अगर एसएसए के सरकारीवाद (महासचिव) अपना असफल दावे चुके हैं कि आज भी करीब 23.5 करोड़ नागरिक देश में ऐसे हैं, जो रोजाना 375 रुपये कमाने में भी असमर्थ हैं। दरअसल महिलाएं और पुरुष मुफ्त अनाज लेने जाते हैं, वे सभी बहुत गरीब हैं, ऐसा नहीं है। महिलाएं घरों और फैक्ट्रियों में काम करती हैं। पुरुष कोई न कोई काम जरूर कर रहा है। उनके नाबालिग बच्चे भी स्थानीय दुकानों और ढाबों पर दिहाड़ी करते हैं। इसलिए मोदी सरकार को प्राथमिकता के आधार पर गरीबी पर व्यापक सर्वेक्षण करना चाहिए।

राय

विरासत से नाहन के सवाल

है। पौराणिक सिन्धुसभ्यता ने इतिहास का अजकबरा के साथ में पैदा किया। अर्थशास्त्र भूला दी है। आज संस्था के भी अलग खुद होने के लिए तैयार बदल रहा है, तो हम भूल है हैं कि ये सदियों हमने कैसे गुजारी। इतिहास अपने शैव्य काल से पुराना सभ्यता के दस्तावेज लिए अशोक काल से आधुनिक परिवेश के तरानों में जो देखना चाहता है, उससे भी अधिक अपरिचित काल में हिमाचल की हुकूमतों ने पतवर्ती व्यासतों को विभिन्न काल खंडों से निकाल कर जोड़ा है। अक्सर सिमरौरी, मंडी, कांगड़ा, चंबा, रामपुर बुशहत या कई क्षेत्रों को परिभाषित, परिमार्जित और परिष्कृत करते रहे, जिनके अजकबरा की भांगरी में पेंटेलासिजस व थरोस मूल्य ही वा दिए। कुछ टुकड़े आज भी नाहन, चंबा, सुजांनपुर, रामपुर बुशहत या पुराना कांगड़ा के अशरोषों में समर काल या ब्रिटिश हुकूमत की शानियों में शिथल, भ्रष्टाशाला, लहोड़ी व फसली की जैसे शहरों का परिष्कार देखते हैं।

यहाँ चँदर हो, गुरुद्वारा हो या पोर-फकीर की मजार, इतिहास के दीपक एक समान जलते हैं, मगर राज्य की विभक्तिकाएँ और दस्तूर इन्हीं के स्वरूप में खलल डालते हैं। कभी बुल्ले शाह ने 'जान में कौन' की रचना में 'ना मैं रहँदा घन नादौन' तक पहुँचने की रहनीयता में वक्त को रास्ता खोखाया था। आप नानादन जाएँ कौन' तक कह डाला, लेकिन या आज यह शहर वक्त की इन्हीं चौपाइयों में जँदा है। 'जननीति के तमगे उतरते गए, ज्यों-ज्यों नेताओं का सपना खान चढ़ा। जीतते के लिए तो नादौन महान एक विधानसभा की ओर बढ़ा, लेकिन जिस शहर ने बुल्ले शाह को जीता, वह कौन आज कहाँ है। क्या आधुनिक इमारतों के शोर में ब्यास की दी के किनारे पुरानी हवाएं बदल गई या मंजर को चुरा कर ही रंगित का हिसाब होता है। इसी तरह कभी सिमरौरी जिला के 'ख्यालया' 'नाहन शहर है नगीना, आए इक दिन लग जाए 'हीन' कहा गया था, लेकिन क्या नाहन का एक दिन अब 'हीन' से लंबा हो गया था, लेकिन अगर एक दिन में सिमट गया, तो कौन दोषी है इस विरासत का जो आज भी सदियों के ज्यों पर अपनी मोतीजुर्मी से सवाल कर रही है। कभी तालाबों का शहर रहे नाहन के नदियों में अवन न जल की आपूर्ति पूरी हो न ही जल निकासी के लिए कोई योजना कारगर सिद्ध रही। लाई ट्रान्टन का दिल्ली गेट और 1875 में महाराज महेश्वर प्रकाश द्वारा स्थापित नाहन फाउंडरी का उद्देश्य ही नाहन की मिट्टी में कहीं ठोका चुका है। राजाओं की 42 पीढ़ियाँ यहाँ से गुजर गईं और शमशेर प्रकाश जैसे दूरदर्शी शासक शहरा शहरी परियोजना का प्राप्ति लिए यह नगर अपनी हर शर पर टोकर खा रहा है। न तो शहरी कानून की योजनाओं को यह खबर है कि यहाँ नगरपालिका का गठन उसी समय हो या था, जब कोलकाता जैसे शहर अपनी शहरी व्यवस्था की नीति तहस सह रहे थे। पब्लिक विकास के दावों के बीच नाहन की पौराणिकता और विरासत की भूमिका का शृंगार कर रहे, तो लालनियों का उदरवा आर्थिक में कुछ नया जोड़ देता। शक विकास के शिलालेख चमकाती परियोजना से मेंडिकल कॉलेज के बोर्ड हासिल कर लिए, लेकिन शहर की संसारी लियों को भय है कि कहीं यह संस्थान भी गुम न हो जाए। इस तरह को विकास चाहिए और यह नाहन विकास परियोजना तहत बाहरी दायरे में हो, तो इसकी पौराणिकता और इतिहासिकता बची रहेगी, वरना यह शहर यूँ ही अपनी निरक्रमा में प्राणित के चिह्न गंवा देगा। नाहन शहर की सीमा से रहने लगे लघु संचालक व बनावट अधिकारी का कार्यलय शिष्ट नरेंगे होंगे, वरना इतिहास के कब्रिस्तान में हम अपने भविष्य का दावा यूँ ही करते रहेंगे। शहर के भीतर जिस किसी स्थिति या सहासत से मेंडिकल कॉलेज को दुर्य बनाया, वह नाहन की छवि के लिए सशस्त्र संघर्ष थाक कदम है।

बुद्धिजीवी को अपनी फकीरी पर गुरुर था।

वह दरअसल पहचाना ही गरीबों में गया। दुनिया के सारे उदाहरण, सारी कहानियाँ, सारी कविताएँ इसीलए लिखी गई क्योंकि उन्हें पहचान लेते गरीब थे। किसी ने कहा गरीबी का अपना बुद्धिज्ञान है, जबकि अमीरी ज्ञान रहित, संदेहना रहित स्थिति का चरम है। बौद्ध में प्रवेश करते ही सबसे कम बुद्धि के साथ काम करना पड़ता है, परना किसी पटवारी के दस्तावेज भर के दिखाओ। सबसे अधिक बुद्धि झोपाड़ी में होती है। वहाँ का हर दिन अन्तरिक्ष को देख सकता है। हर दिन सुखी रोटी को स्वादिष्ट बनाया बुद्धि का है, जबकि पंच

सितारा होटल में उबलती दाल को क्या मालूम कि खाने वाला खाते हुए बुद्धि रखता है या नहीं। बुद्धि उस टांके में ही जो पैबंद को पहनने लायक, फटी चमपल को चलने लायक और कुड़वेदान में फँके गए एटीड फूड को फिर से खाने लायक बना देता है। बुद्धिजीवी हर समय खुद पर शक कर पाता क्योंकि उसने हासिल बुद्धि और क्या करती।

पतियों को कई ज्वादा बुद्धि पतियों के पास होती है या वे ये समझकर शंकातु हो जाते हैं। पतनी को बुद्धि से डरेंगे तो आत्मशुद्धि होती रहेगी वरना कोई भी पति आज तक बुद्धिजीवी साबित होकर नहीं मरा। मरे नालायक बनकर या जिन्होंने

सोचकर शादी पर राय बनाने में मेहनत की,
कुंआरों ही मर गए। बहरहाल बुद्धिजीवी अकेला
था। कोई नहीं जानकर कि बुद्धि के कारण वह ऐसे
है या शादी न करके बुद्धिजीवी हो गया, फिर भी
वह लोगों की अमीरी देखकर सोच में पड़ जाता है।
है कि मरने के लिए इन्हें साफ़ का अमीर होना जरूरी
है या फकीर ही तरह से मरते हैं। आज तक
उसने किसी भी शव को अमीरी की हालत में नहीं
देखा। लेकिन पता चला है कि कुछ अमीर मरने
के लिए अमीरी को ही बुक करा रहे हैं। शहर में
एक अलग से शमशांतादात बन गया जहाँ शवदाह
के लिए बुकिंग जारी थी। बुद्धिजीवी के पास सूची

थी जो मरने के बाद यहाँ बतौर अमीर ही शव में चाहते थे, लेकिन शहर में अचानक आई बाढ़ में कई लोग बच गए। इसी बाढ़ में एक अमीर का शव गरीबों के झुंड में फँस गया। सरकार का शोक प्रकट कर चुकी थी, लेकिन घर वाले चाहते थे कि उसे अमीरों के शमशानाचट में अंतिम दर्शनों के लिए सखा जाए। आश्चर्य यह था कि जहाँ शव फँसे थे, वह गरीबों की जाहद थी। वहाँ चारों ओर बस्ती थी बुद्धिजीवी वहाँ सरकार के सहयोग से लार्सेन बटोर रहा था। जैसे ही अमीर शव उठने चाह्यों में आया शव बतियाया लगा, 'मुझे ज़ाया जल से धोया जाए यह अमीर की सपना ही है। आसानी से नहीं

जलेगी।' बुद्धिजीवी ने देखा कि अमीर की लाश गरीब शवों के झुंड में फँस कर आतत थी। गरीबों के शव शांत थे, लेकिन अमीर का शव छटपट रहा था। आदतन बुद्धिजीवी ने गरीब शव उठाए, तो अमीर का भी उनके साथ उड़ गया। वहाँ पहली बार सामूहिक रूप से जल रहा चिता और पंख गरीबों लाशें जल रहा था, लेकिन किसी मलाल में अमीर का शव झूल रहा था। पहली बार गरीबों ने मिलकर अमीर के शव को जलने में मदद की। बिना किसी शानो-शौकत के अमीर के शव को गरीबी में जलाने का पहली बार एहसास हो रहा था। -क्रमशः

विचार

देश और प्रदेश की समाजसेवी संस्थाओं को नशे को समाप्त करने के लिए पुलिस को सहयोग देना होगा'

भारतवर्ष के शिक्षण संस्थानों में बहुर रहै नशा तस्करों से हर कोइ परेशान है क्योंकि नशा तस्कर युवाओं के यौवन को खोखला करके नजर आ रहे हैं जो समाज के लिए एक गंभीर चुनौती बन रहे हैं प्राचीन समय में हमारे शिक्षण संस्थान शिक्षा के मंदिर होते थे, जहां युवा अपने भविष्य की कहानी का शुरु करते थे, सपने संजोते थे, गुणों से आशीर्वाद लेते थे, ज्ञान व शब्दों को जीवन के यथार्थ में उतारते थे जिसके आधार पर शिक्षण संस्थान ज्ञान के केन्द्र हुआ करते थे। लेकिन वर्तमान समय में वास्तविक स्थिति चिंताजनक है क्योंकि जो ज्ञान का केन्द्र होने का दर्जा प्राप्त है, वही आज तेजी से नशा तस्करों के लिए अच्छा बाजार बनता जा रहा है। चाहे वो हिमाचल प्रदेश के शिक्षण संस्थान हों या अन्य प्रदेश के, सिस्टि एक समान ही है। हाल ही में प्रदेश के सबसे बड़े शिक्षण संस्थानों में से एक एनआईटी हमीरपुर में जहां माता-पिता बच्चों की डिग्रियां लेने पहुंचते हैं तो एक पितृ अपने मृत पुत्र का शव लेने पहुंचा। सोचिए, उस पितृ पर क्या बीती होगी। कितनी हिम्मत होगी उस पितृ में। इस घटना में जहां एक तरफ एक घर का दीपक बुझा दिया तो दूसरी तरफ शिक्षण संस्थानों को नशा बाजार बनकर पर आतुर नशा तस्करों का भी भंडाफोड़ किया है।

यह एक चिंतनीय विषय है तथा ध्यान देने योग्य भी, कि नशा स्मरकों का निशाना घरों से दूर रह रहे बच्चे होते हैं जो कि कमरा लेकर या हॉस्टल लेकर घर वालों की नजर से दूर रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप घरवालों से पैसे मांगने पर पैसे भी मिल जाते हैं, लेकिन वो पैसे जता कर कहाँ हैं, यह कुछ जिम्मेवार परिवार ही अपने बच्चों से पूछते हैं। यह नशा मामला को कई पहला नहीं है। ऐसे कई मामले प्रतिदिन समाचार पत्रों व न्यूज चैनलों पर देखने व

नूतने को मिलते हैं। इनमें नया कुछ नहीं होता, बल्कि होता है तो भरने वाला किसी भी कर का बच्चा, जिसकी नशा तस्कर और पुराने, नशा भी वही पुराना, अमेरिकी का वही और परिणाम भी वही। समाचार पत्रों में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा होता है 'कई मामलों में पहले से दोषी नशा तस्कर इस मामले में भी मुख्य आरोपी'। अगर वह छूट भी ऐसा कार्य करता हुआ अपराधी गैर है तो बहुत कैसे पाना, जो वहाँ यथार्थतः बार बार छूट कर नशा प्रोसेसमें में लग जाता है। ऐसे कृत्यों में आमतौर पर रसदधार प्रविवारों के द्वारा इन कामों को कर रहे हैं जिन्हें पछुने वाला कोई नहीं है और पैसों की कमी भी नहीं है।

नशा युवाओं की नशों में घुल कर कई परिवारों का नशा बन रहा है। शिक्षण संस्थानों की कार्यप्रणाली व सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवालिया निशान है कि आखिर नशा परिसरों में कैसे पहुँच जाता है। अंदर तो छोड़ो, जहां नशा परिसरों के आसपास भी नहीं पहुँचना चाहिए, वो आसानी से छात्रों के हॉस्टल में मिल रहा है। किराए पर रह रहे युवाओं के कमरों में क्या चलता है, कोई नहीं जानता। मकान मालिक को समय पर किराया मिल रहा है, वो उसी में संतुष्ट है, उसे उससे अधिक कुछ नहीं चाहिए। आवश्यकता है नजर रखनी की। इससे पहले ही अली हाथ ली है मंडी के एक किराए के कमरे में दोस्त के घरवाले घर गए तो रात को वहां ओवरडोज लेने से सुबह मौत की नौद मिली। यहाँ वो कहावत सिद्ध करते ये डर नजर आते हैं 'घर वाले घर नहीं हमें कुंसी का डार नहीं'। परिवारों को जानना होगा, मुँह मांगे पैसों दो लेकिन नजर भी रखनी होगी कि आखिर खर्चें कहाँ जा रही हैं, कहीं अपनी मौत की कहानी खुद ही तो नहीं लिखी जा रही। नशा तत्करो पर पुलिस न जाने इतनी मेहरबान क्यों नजर आती है कि नशा मामले में संलिप्त इन आरोपियों को आखिर छोड़ क्यों दिया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में नशा एक महामारी की तरह फैल रहा है। प्रदेश के हर जिले में नशा माफिया अपने पैर पसार चुका है। हिमाचल पुलिस की

A close-up photograph of various medical supplies. In the foreground, a syringe with a red plunger is partially filled with a pink liquid. Behind it, several capsules and pills are scattered. One capsule is blue and white with '13' and '83' printed on it. Another is blue and white with '12' and '83'. There are also white pills and a blue pill with a logo. The background is a bright, out-of-focus yellow and red.

रिपोर्ट के अनुसार पिछले 6 सालों में एनडीपीए के मामले दोगुनी रफ्तार से बढ़े हैं जोवि चिंताजनक है। नशे के मामलों में प्रवेश देशभर में दूसरे नंबर पर पहुँच गया है। पंजाब इस सूची में शीर्ष पर है। प्रदेश में मादक पदार्थों की तस्करी नशीली दवाओं के दुरुपयोग, बांग और अफीम की खेती बड़ी समस्या है, लेकिन पिछले कुछ सालों में लाखों युवा सिंथेटिक ड्रग जैसे हेरोइन, सिद्धा जैसे नशी की चपेट में आ गए हैं। अगर य धंधा ऐसा ही चलता रहा तो कई हिमाचल के नशे की सूची में पहले स्थान पर आते समय नहीं लगेंगे। देश समेत हिमाचल के युवाओं पाश्चात्य प्रभाव में जन्मदिन के अवसर पर पार्टी करना, नशा करना आम होता जा रहा है कई होटलों में बार, पब और पार्टियों के नाम प नशा खुले रूप में चल रहा है जिन्हें पूछने वाले कोई नहीं है, जिस कारण नशा खुलेआम रेस्तराँ होटलों से भी खुला फैल रहा है। इन पर संतों ने रेस् पडनी चाहिए। पुलिस के मुताबिक हिमाचल

की कुल जनसंख्या में से 0.24 प्रतिशत आबादी नशे की चपेट में है। एक सर्वे के अनुसार प्रदेश की करीब 2 लाख युवा ड्रग एडिक्टिड हैं जिसमें लड़कियां भी शामिल हैं। यह स्थिति एक खतरने की ओर इशारा कर रही है तथा हिमाचल पुलिस के ये आंकड़े इस बात की गवाही दे रहे हैं कि खतरा कितना बढ़ा है।

हिमाचल पुलिस के मुताबिक साल 2017 में प्रदेश के अलग-अलग थानों में एनडीपीएस 1221 मामलों दर्ज हुए, वर्ष 2018 में 1722, 2019 में 1935 और 2020 में 2058 मामले दर्ज हुए। याद कीजिए, 2020 वो साल था जिसमें कोरोना महामारी अपने रौद्र रूप में थी। इस कोरोना के समय में भी हिमाचल में नशे के रूपांतरीत मौत का सामान्य बिकता रहा तथा साल 2020 में ये मामलों बढ़कर 2223 पहुंच गए और 2022 में 2226 मामलों के साथ स्थिति बिगड़ती ही जा रही है। जब 2023 के आंकड़े आएं तो कहीं गिनाई अधिक न हो, इसका अंदेशा एक सप्ताह में ही सामने आ रहा है।

पहले मंडी, फिर एनआईटी और न जाने लिखिते और कहाँ किस घर का दीपक बुझा होगा। आखिर किसकी शह में परिसरों में घुल रहा है और प्रदेश में इन नशा तस्करों ने कैसा जाल बुना है। समय रहते इस जाल में भेदा गया तो हो न हो इस नशे के नाश का अशिकार हम-आपके घर से हो। इसलिए आगे की जागरूक होकर इस पाउंडर रूपी यानी चिट्ठा को रोकना होगा तथा पुलिस सहयोग कर इन नशा तस्करों को सलाखों के धकेलना ही होगा, अन्यथा देश-प्रदेश व खास शिक्षण संस्थाओं में स्थिति सामान्य से अनियंत्रित हो गई, इसका अनुमान लें सृष्टिकल होगा। देश और प्रदेश की समाज संस्थकों को भी नशे को समाप्त करने के सरकार और पुलिस को सहयोग देना होगा। नशा तस्करों की समाप्ति हो सकती है व युवा को नशे से छुटकारा मिल पाएगा।

प्रो. मनोज ड

बुनियादी ढांचा क्षेत्र की 417 परियोजनाओं की लागत 4.77 लाख करोड़ रुपये बढ़ी

केंद्रीय सांख्यिकी मंत्रालय के मुताबिक बुनियादी ढांचा क्षेत्र की 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक के खर्च वाली 417 परियोजनाओं की लागत इस साल सितंबर तक तय अनुमान से 4.77 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ गई है। इस तरह की 1763 परियोजनाओं में से 417 की लागत बढ़ गई है जबकि 842 अन्य परियोजनाएं देरी से चल रही हैं।

नई दिल्ली। बुनियादी ढांचा क्षेत्र की 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक के खर्च वाली 417 परियोजनाओं की लागत इस साल सितंबर तक तय अनुमान से 4.77 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ गई है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि देरी और अन्य कारणों से इन परियोजनाओं की लागत बढ़ी है।

सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय 150 करोड़ रुपये या इससे अधिक की लागत वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर नजर रखता है। मंत्रालय की सितंबर, 2023 की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस तरह की 1,763 परियोजनाओं में से 417 की लागत बढ़ गई है, जबकि 842 अन्य परियोजनाएं देरी से चल रही हैं।

19.22 प्रतिशत बढ़ी परियोजनाओं की लागत रिपोर्ट के अनुसार, 'इन 1,763 परियोजनाओं के क्रियान्वयन की मूल लागत 24,86,402.70 करोड़ रुपये थी लेकिन अब इसके बढ़कर 29,64,345.13 करोड़ रुपये हो जाने का अनुमान है। इससे पता चलता है कि इन परियोजनाओं की लागत 19.22 प्रतिशत यानी 4,77,942.43 करोड़ रुपये बढ़ गई है।'

कम हुई देरी से चल रही परियोजनाओं की संख्या रिपोर्ट के मुताबिक सितंबर, 2023 तक इन परियोजनाओं पर 15,44,600.67 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं, जो कुल अनुमानित लागत का 52.11 प्रतिशत है। हालांकि, मंत्रालय ने कहा है कि यदि परियोजनाओं के पूरा होने की हालिया समयसीमा के हिसाब से देखें तो देरी से चल रही परियोजनाओं की संख्या कम होकर 617 पर आ जाएगी। रिपोर्ट में 298 परियोजनाओं के चालू होने के साल की जानकारी नहीं दी गई है।



लगातार चौथे महीने महंगाई दर में गिरावट, अक्टूबर में 4.87 प्रतिशत रही खुदरा महंगाई दर

अक्टूबर महीने में खुदरा महंगाई दर घटकर 4.87 प्रतिशत रही। महंगाई दर यह गिरावट लगातार तीन महीने से देखने को मिल रही है। सितंबर महीने में महंगाई दर 5.02% और अगस्त में यह 6.83 फीसदी थी। जानकारी का मानना है कि त्योहारी सीजन में ग्राहकों ने जमकर खरीदारी की है जिसके चलते महंगाई दर में कमी देखने को मिली है।

नई दिल्ली। त्योहारी सीजन में महंगाई से राहत मिलती दिखी है। सोमवार को केंद्रीय सांख्यिकी मंत्रालय ने खुदरा महंगाई के आंकड़े जारी किए, जिनके मुताबिक रिटेल महंगाई दर में पिछले चार महीने से गिरावट जारी है।

खाने-पीने की वस्तुओं की महंगाई दर में

गिरावट खाने-पीने की वस्तुओं में गिरावट के चलते अक्टूबर 2023 में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स घटकर 4.87 प्रतिशत रह गया जो पिछले महीने 5.02% और अगस्त में यह 6.83 फीसदी था। वहीं खाने पीने की महंगाई दर 6.61 प्रतिशत रही जो पिछले महीने 6.62 प्रतिशत थी। वहीं पिछले साल यानी अक्टूबर 2022 में खुदरा महंगाई दर 7.01 प्रतिशत और खाने पीने की महंगाई दर 6.71 प्रतिशत थी।

दालों की महंगाई दर में तेजी अक्टूबर महीने में जहां एक ओर खाने-पीने की वस्तुओं में की कीमत में गिरावट देखने को मिली। दूसरी ओर, दालों की महंगाई दर सितंबर के मुकाबले बढ़कर

18.79 प्रतिशत की रही। पिछले महीने यह 16.38 फीसदी रही अनाज और उससे जुड़े उत्पाद की महंगाई दर 10.65 फीसदी रही, जो सितंबर में 10.95 प्रतिशत थी। अक्टूबर महीने में अंडों की महंगाई दर 9.30 प्रतिशत, फलों की महंगाई दर 9.34 फीसदी और सब्जियों की महंगाई दर घटकर 2.70 फीसदी की रही।

ब्याज दर स्थिर रहने का अनुमान महंगाई दर में लगातार चौथे महीने से गिरावट देखने को मिल रही है। जानकारी के माने तो महंगाई दर में देखने को मिली गिरावट के चलते एक बार फिर से ब्याज दरें स्थिर रह सकती हैं। बता दें कि रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) रेपो रेट तय करने के लिए महंगाई दर का आंकलन करता है।

चालू वित्त वर्ष में पहली बार अक्टूबर के निर्यात में बढ़ोतरी के आसार

आने वाले 15 नवंबर को अक्टूबर महीने के निर्यात के आंकड़ा जारी किए जाएंगे। वित्त वर्ष 2023-24 में पहली बार अक्टूबर महीने में वस्तु निर्यात में बढ़ोतरी की संभावना है। वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल ने अक्टूबर महीने में वस्तु निर्यात में बढ़ोतरी की उम्मीद जाहिर की है। उनका मानना है कि आने वाले महीनों में वस्तुओं के निर्यात में बढ़ोतरी देखने को मिलेगी।

नई दिल्ली। चालू वित्त वर्ष 2023-24 में पहली बार अक्टूबर के वस्तु निर्यात में बढ़ोतरी की पूरी संभावना है। अप्रैल से लेकर सितंबर तक वस्तु निर्यात में गिरावट दर्ज की गई है। लेकिन मुख्य रूप से इंजीनियरिंग वस्तु, फार्मा, इलेक्ट्रॉनिक्स व कृषि वस्तुओं के निर्यात में बढ़ोतरी की वजह अक्टूबर के निर्यात में बढ़ोतरी हो सकती है। हालांकि यह बढ़ोतरी दर अधिकतम पांच प्रतिशत तक रह सकती है।

वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल ने भी पिछले महीने अक्टूबर के वस्तु निर्यात में बढ़ोतरी की उम्मीद जाहिर कर चुके हैं। उन्होंने कहा था कि नए बाजार की तलाश में सफलता से हमारे निर्यात की गिरावट कम

हो रही है और आने वाले महीनों में वस्तुओं के निर्यात में बढ़ोतरी होगी। अक्टूबर के पहले दो सप्ताह के निर्यात में बढ़ोतरी का रुख रहा है।

15 नवंबर को जारी होंगे निर्यात के आंकड़े आगामी 15 नवंबर को अक्टूबर के निर्यात का आंकड़ा जारी किया जाएगा। निर्यात में गिरावट की दर भी पिछले एक-दो माह से कम हो रही है। इस साल जून-जुलाई में वस्तु निर्यात की गिरावट दर 10 प्रतिशत से अधिक चल रही थी जो सितंबर में 2.62 प्रतिशत रह गई। विदेश व्यापार विशेषज्ञों के मुताबिक पिछले दो माह से इंजीनियरिंग गुड्स के निर्यात में बढ़ोतरी दिख रही है जो कुल वस्तु निर्यात के लिए सकारात्मक संकेत हैं।

वस्तु निर्यात का कुल निर्यात में इसकी 20 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। सितंबर में इंजीनियरिंग गुड्स के निर्यात में पिछले साल सितंबर की तुलना में 6.79 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही जबकि इस साल अप्रैल से अगस्त तक इंजीनियरिंग गुड्स के निर्यात में गिरावट दर्ज की गई। इस साल सितंबर में भी पेट्रोलियम पदार्थ एवं जेम्स व ज्वेलरी को छोड़ दे तो वस्तुओं के कुल के निर्यात में



बढ़ोतरी रही। मांस व डेयरी व पोल्टी उत्पाद, प्रोसेस्ड खाद्य आइटम, तिलहन व ऑयल मिल्स के

बेहतर प्रदर्शन से भी वस्तु निर्यात को समर्थन मिल रहा है। इस साल अप्रैल-सितंबर में 211 अरब डॉलर का वस्तु निर्यात

किया जा चुका है जबकि पिछले साल अप्रैल-सितंबर में 231 अरब डॉलर का निर्यात किया गया था।

मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में आगे भी जारी रहेगी तेजी, सर्वे में सामने आई ये बात

परिवहन विशेष न्यूज सर्वे में 4.88 लाख करोड़ रुपये से अधिक के संयुक्त वार्षिक कारोबार वाले बड़े और एसएमई दोनों खंडों की 380 से अधिक मैनुफैक्चरिंग कंपनियों से प्रतिक्रिया ली गई। भारतीय मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में मौजूदा औसत क्षमता उपयोग लगभग 74 प्रतिशत है जो पिछली तिमाहियों के दौरान दर्ज 73 प्रतिशत से थोड़ा अधिक है। इस मामले में पिछले सर्वे की तुलना में भी थोड़ा सुधार हुआ है।

नई दिल्ली। उद्योग संगठन फिक्की के एक नवीनतम तिमाही सर्वे से पता चला है कि विकसित देशों में मंदी के बावजूद 2023-24 की दूसरी तिमाही में भारतीय मैनुफैक्चरिंग में तेजी रही। सर्वे के मुताबिक मैनुफैक्चरिंग में शेष बची तिमाहियों में भी तेजी बने रहने की संभावना है।

सर्वे में जुलाई-सितंबर 2023-24 तिमाही के लिए दस प्रमुख क्षेत्रों-मोटर वाहन और आटो घटक, पूंजीगत सामान और निर्माण उपकरण, सीमेंट, रसायन, उर्वरक और फार्मास्यूटिकल्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और

क्वाइट गुड्स, मशीन टूल्स, धातु और धातु उत्पादों, वस्त्र, परिधान और तकनीकी वस्त्र, कागज और विविध के लिए निर्माताओं के प्रदर्शन और भावनाओं का आकलन किया गया है।

निवेश दृष्टिकोण में काफी सुधार सर्वे में 4.88 लाख करोड़ रुपये से अधिक के संयुक्त वार्षिक कारोबार वाले बड़े और एसएमई दोनों खंडों की 380 से अधिक मैनुफैक्चरिंग कंपनियों से प्रतिक्रिया ली गई। भारतीय मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में मौजूदा औसत क्षमता उपयोग लगभग 74 प्रतिशत है, जो पिछली तिमाहियों के दौरान दर्ज 73 प्रतिशत से थोड़ा अधिक है।

पिछली तिमाही की तुलना में भविष्य के निवेश दृष्टिकोण में भी सुधार हुआ है क्योंकि 57 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने आने वाले छह महीनों में निवेश और विस्तार की योजना की बात कही है।

ये भी पढ़ें: Rice Export: भारत सरकार ने फिर बढ़ाया मदद का हाथ, पतंजलि आयुर्वेद ने नेपाल भूकंप पीड़ितों को दान किया 20 मीट्रिक टन चावल

मैनुफैक्चरिंग सेक्टर में भी हुआ



सुधार इस मामले में पिछले सर्वे की तुलना में भी थोड़ा सुधार हुआ है। प्रमुख बाधाओं की बात करें तो भारत में मैनुफैक्चरिंग सेक्टर की वास्तविक क्षमता का एहसास करने के लिए मांग एक सीमित कारक है, जिसमें 40 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने इसे एक महत्वपूर्ण बाधा के रूप में रेखांकित किया है।

उन्होंने कहा, चाहे वह घरेलू मांग हो या निर्यात, यह एक प्रमुख सीमित कारक बना हुआ है। कच्चे माल की उच्च कीमतें, वित्त की बढ़ती लागत, रसद और अन्य सप्लाय चैन ऐसी प्रमुख बाधाएं हैं, जो विस्तार योजनाओं को प्रभावित कर रही हैं।

निर्यात मांग में और सुधार की उम्मीद निर्यात के मोचे पर प्रदर्शन पिछली

रेमंड के MD गौतम सिंघानिया शादी के 24 साल बाद पत्नी नवाज से अलग हुए, शेयर किया भावुक पोस्ट



रेमंड (Raymond) ग्रुप के एमडी गौतम सिंघानिया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी पत्नी नवाज से अलग होने का एलान किया। दोनों की शादी साल 1999 में हुई थी। पिछले दिनों इंटरनेट पर एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें नवाज को गौतम सिंघानिया की दिवाली पार्टी में एंट्री नहीं मिली थी। यह पार्टी ठाणे में आयोजित की गई थी।

मुंबई। अरबपति उद्योगपति गौतम सिंघानिया अपनी पत्नी से शादी के 24 साल बाद अलग हो गए। उनकी शादी 1999 में हुई थी। उस दौरान ऐसी खबरें सामने आई थीं कि शादी से पहले उन्होंने गौतम सिंघानिया को आठ साल तक डेट किया था।

रेमंड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक गौतम सिंघानिया ने सोमवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर घोषणा करते हुए कहा कि यह पहले जैसी दिवाली नहीं है। वह अपनी पत्नी नवाज से अलग हो गए हैं।

नवाज को नहीं मिली गौतम सिंघानिया की दिवाली पार्टी में एंट्री यह घोषणा इंटरनेट पर एक

वीडियो के सामने आने के कुछ ही मिनटों बाद हुई, जिसमें कथित तौर पर दिखाया गया है कि नवाज को पिछले दफ्ते ठाणे में गौतम सिंघानिया द्वारा दिवाली से पहले की पार्टी के निमंत्रण के बावजूद प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जा रही थी।

32 साल से दोनों साथ थे उन्होंने कहा कि फिटनेस ट्रेनर नवाज और वह एक जोड़े के रूप में 32 साल तक साथ रहे। उनके दो बच्चे हैं। उन्होंने बच्चों की कस्टडी को लेकर विवरण नहीं दिया है। उन्होंने कहा कि दोनों अपने बच्चों के लिए जो भी सबसे अच्छा होगा वह करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। नवाज ने कानून की पढ़ाई की थी, लेकिन बाद में वह फिटनेस ट्रेनर बन गईं।

विवादों से रहा है गौतम सिंघानिया का पुराना नाता गौतम सिंघानिया का विवादों से पुराना नाता रहा है। एक फ्लैट को लेकर उनका पिता विजयपत्त सिंघानिया से विवाद काफी सुर्खियों में रहा था। उनके पिता फ्लैट को बेचना चाहते थे, जिसे गौतम अपने पास रखना चाहते थे। इस विवाद के चलते दोनों के रिश्ते काफी खराब होने लगे थे। विजयपत्त सिंघानिया ने रेमंड ग्रुप की नींव रखी थी।

कम हुई मांग तो लुढ़क गए सोने और चांदी के दाम, जानिए आपके शहर में आज क्या है 24 कैरेट गोल्ड का रेट



देश में आज सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट देखने को मिली है। पिछले दिनों देश में धनतेरस और दिवाली को लेकर गोल्ड की डिमांड बढ़ गई थी हालांकि उस वक्त भी कीमतों में थोड़ा उछाल देखने को नहीं मिला था। ऐसे अगर आप सोने में निवेश के लिहाज के हिसाब से देख रहे हैं तो उससे पहले अपने शहर में सोने की कीमतों के बारे में जान लीजिए।

नई दिल्ली। दिवाली के अगले दिन यानी सोमवार 13 नवंबर को सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट देखने को मिली है। देश में पिछले दिनों धनतेरस और दिवाली के चलते सोने की मांग बढ़ी थी जिसके कारण कीमतों में थोड़ी बढ़ोतरी को मिली थी।

आज क्या है सोने का भाव ? आज वायदा कारोबार में सोने की कीमत 93 रुपये गिरकर 59,659 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर, दिसंबर डिलीवरी वाले सोने के अनुबंध की कीमत 93 रुपये या 0.16 प्रतिशत की गिरावट के साथ 59,659 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई, जिसमें 10,649 लॉट का कारोबार हुआ।

विशेषज्ञों की मानें तो सोने की कीमतों में गिरावट का कारण का श्रेय प्रतिभागियों द्वारा अपने पदों में कटौती है। वैश्विक स्तर पर अगर बात करें तो न्यूयॉर्क में सोना 0.17 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1,940.90 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था।

क्या है आज चांदी की कीमत ? आज वायदा कारोबार में चांदी की कीमत 727 रुपये गिरकर 69,305 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में, दिसंबर डिलीवरी के लिए चांदी अनुबंध 727 रुपये या 1.04 प्रतिशत की गिरावट के साथ 69,305 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गया, जिसमें 25,337 लॉट का कारोबार हुआ।

वैश्विक स्तर पर, न्यूयॉर्क में चांदी 0.92 प्रतिशत की गिरावट के साथ 22.08 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रही थी।

क्या है सोने की स्पॉट कीमत ? गुड रिटर्न के मुताबिक खबर लिखे जाने तक सोने की स्पॉट कीमत विभिन्न शहरों में इस प्रकार है:

दिल्ली में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,640 रुपये है। नोएडा में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,640 रुपये है। मुंबई में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,490 रुपये है। चैन्नई में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,980 रुपये है। कोलकाता में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,490 रुपये है। बेंगलुरु में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,490 रुपये है। केरल में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,490 रुपये है। पटना में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,540 रुपये है। सूरत में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,540 रुपये है। चंडीगढ़ में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,640 रुपये है। लखनऊ में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 60,640 रुपये है।

